अप्रैल, 2022 वर्ष : 43 अंक : 04

www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

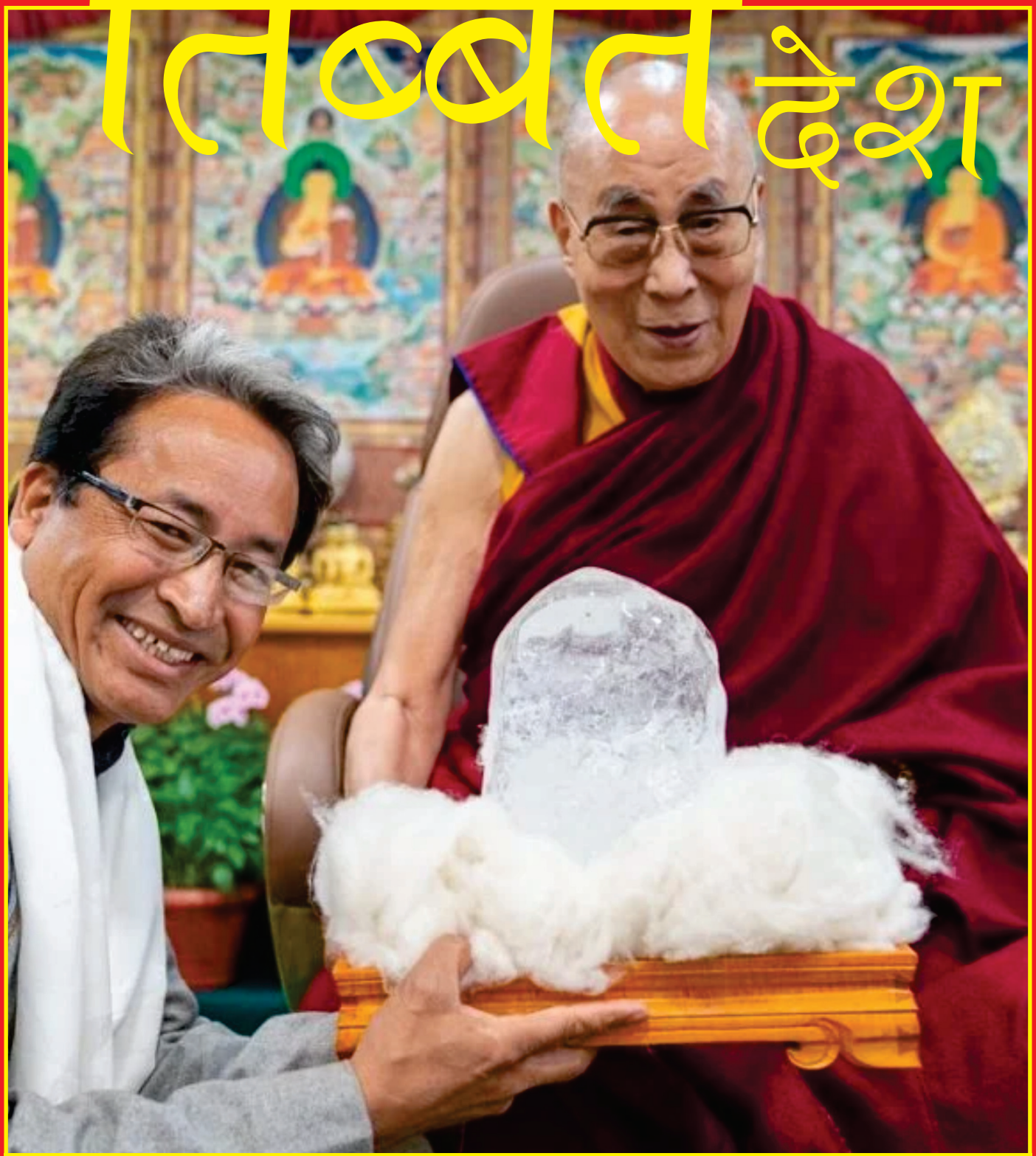

परम पवन दलाई लामा के साथ पर्यावरणविद् सोनम वांगचुक

मूल्य :10 रू , वार्षिक : 100 रू

अप्रैल, 2022 वर्ष : 43 अंक : 04

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

सीटीए के सिक्योंग पेन्पा छेरिंग, अमेरिकी निचले सदन की स्पीकर नैन्सी पेलोसी और आईसीटी के चेयरमैन रिचर्ड गेर

प्रधान संपादक
जमयंग दोरजी

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
तेनजिन पलजोर , तेनजिन जोरदेन

वितरण प्रबंधक
छोन्यी छेरिंग

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

समाचार -

भविष्य के लिए संवाद के प्रतिभागियों के साथ बैठक 1

पृथ्वी दिवस पर परम पावन दलाई लामा का संदेश 2

जलवायु कार्रवाई पर संवाद के प्रतिभागियों से मिले परम पावन दलाई लामा 3

सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग ने तिब्बत के लिए अमेरिका के विशेष समन्वयक उज़रा ज़ेया से शिष्टाचार भेंट की 4

निर्वासित तिब्बती नेता ने वाशिंगटन की पहली आधिकारिक यात्रा पूरी की सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग ने प्रतिनिधि सभा की स्पीकर नैन्सी पेलोसी और अन्य अमेरिकी सांसदों से मुलाकात की। 5

१६वें कशाग ने तिब्बती समुदाय में युवा बेरोजगारी को कम होने की पुष्टि की: मैनपाट तिब्बती बस्ती में सिक्योंग 6

न्गाबा की कीर्ति में ८१ वर्षीय ताफून ने आत्मदाह किया 7

बच्चों को पढ़ाने के लिए चीन तिब्बती माता-पिता को चीनी भाषा कार्यशाला में जबरन भेज रहा 8

डिट्टी स्पीकर के नेतृत्व वाले तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल का दिल्ली में तिब्बत के पक्ष में अभियान 9

तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने ताइवान, अमेरिका और अन्य देशों के दूतावासों के दौरे के साथ तिब्बत एडवोकेसी अभियान का समापन किया 10

ब्रिटेन के मिल्टन कीन्स में नौवीं बार तिब्बत का राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया 11

स्पीकर ने राज्यसभा सांसद मुजीबुल्ला खान और श्री के.टी.एस. तुलसी से मुलाकात की 12

समाचार -

अमेरिकी विदेश विभाग ने चीन से तिब्बत के ११वें पंचेन लामा को 'तत्काल रिहा' करने का आग्रह किया 13

अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के कशाग सचिवालय का दौरा किया 14

भारत के सर्वदलीय सांसद प्रतिनिधियों ने तिब्बती संघर्ष के साथ एकजुटता जताने के लिए धर्मशाला का दौरा किया 15

त्रिपुरा के मंत्री राम प्रसाद पॉल ने तिब्बती संसद का दौरा किया 16

जिनेवा शिखर सम्मेलन में तिब्बत और अन्य क्षेत्रों में चीन द्वारा उत्पीड़न पर चर्चा 17

भारत-चीन तनाव को हल करने की कुंजी तिब्बत मुद्दे के समाधान में है : डिट्टी स्पीकर डोल्मा त्सेरिंग तेखांग 18

भारत-तिब्बत सहयोग मंच ने तिब्बत के ११वें पंचेन लामा की ३३वीं जयंती के उपलक्ष्य में अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया 19

भारत-तिब्बत समन्वय संघ (बीटीएसएस) ने दिल्ली में बैठक और शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शन किया 20

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग की सदस्य रिनचेन लामो ने दक्षिण भारत में तिब्बती बस्तियों का दौरा किया 21

भारत-तिब्बत समर्थक समूहों और बेंगलुरु में मुख्य प्रतिनिधि कार्यालय ने ११वें पंचेन लामा की ३३वीं जयंती मनाई 22

आईटीएफएस हजारीबाग में ११वें पंचेन लामा की ३३वीं जयंती मनाई गई 23

OMMCOM NEWS

दुनिया को क्यों सावधान रहना चाहिए?

मुद्रक एवं प्रकाशक जमयांग दोरजी द्वारा प्रेम गुलाटी , डोली ऑफसेट प्रिंटर्स , डी -१५२ , एफ. एफ. सी. ओखला , नई दिल्ली -११००२० से मुद्रीत

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट
www.indiatibet.net
Email:
indiatibet7@gmail.com

अपनी बात

अपहर्ता चीन से पंचेन लामा गेद्धुन चुकी नीमा को छोडने की मांग

बौद्ध धर्मगुरु ग्यारहवें पंचेन लामा गेदुन चुकी नीमा के तैंतीसवें जन्मदिन २५ अप्रैल २०२२ को विभिन्न देषों में अनेक संस्थाओं द्वारा चीन सरकार से मांग की गई कि वह पंचेन लामा को शीघ्र रिहा करे। इससे स्पष्ट है कि तिब्बती बौद्ध धर्मगुरु पंचेन लामा के शरण पर सम्पूर्ण लोकतांत्रिक ताकतें एकजुट हैं। ज्ञातव्य है कि सिर्फ छः वर्ष के बालक पंचेन लामा का चीन सरकार ने उनके परिजनों सहित अपहरण कर लिया था। सभी तिब्बती और तिब्बत समर्थकों के दिल में पंचेन लामा के प्रति जबर्दस्त श्रद्धाभाव है। वे उनके तथा उनके परिजनों के स्वास्थ्य आदि के बारे में प्रामाणिक और विष्वसनीय जानकारी चाहते हैं। वे उन्हें देखना चाहते हैं। उनसे मिलना चाहते हैं। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य है कि चीन सरकार इस संबंध में मौन है। सत्य बताने के स्थान पर वह भ्रम फैलाने में तत्पर है। धर्मविरोधी साम्यवादी चीन सरकार द्वारा पंचेन लामा के अपहरण से साफ है कि वह तिब्बत की धार्मिक पहचान को मिटाने हेतु साजिषपूर्ण नीति पर चल रही है।

ग्यारहवें पंचेन लामा के तैंतीसवें जन्मदिन को भारत स्थित निर्वासित तिब्बत सरकार जो कि लोकतांत्रिक तरीके से तिब्बतियों द्वारा चुनी गई है, ने भी महत्वपूर्ण बना दिया है। निर्वासित तिब्बत सरकार के सिक्योंग पेंपा त्सेरिंग ने २४ अप्रैल से प्रारम्भ अपनी अमरीका यात्रा में इस विषय को प्रमुखता से उठाया है। उन्होंने तिब्बत मामलों की अमरीकी समन्वयक आजरा जेया तथा इस विषय से जुड़े अन्य अमरीकी अधिकारियों एवं नीति निर्माताओं से भेंट की। वे अमरीकी प्रतिनिधि सभा की अध्यक्ष नैन्सी पैलोसी तथा कांग्रेस के कई सदस्यों एवं अधिकारियों से मिले। उनके मतानुसार तिब्बत समस्या का सही समाधान "मध्यममार्ग" है। तिब्बत को चीन सरकार अपनी ही संवैधानिक व्यवस्था तथा राष्ट्रीयता संबंधी कानून के अनुकूल "वास्तविक स्वायत्तता" प्रदान करे । विदेष नीति एवं प्रतिरक्षा चीन के पास रहे। शिक्षा, कृषि आदि अन्य सभी विषय तिब्बत को सौंपे जायें। इससे चीन की भौगोलिक एकता एवं संप्रभुता पूर्णतः सुरक्षित रहेगी तथा तिब्बतियों को स्वशासन का अधिकार मिल जायेगा। ज्ञातव्य है कि साम्राज्यवादी चीन ने १९५९ में स्वतंत्र देष तिब्बत पर अवैध कब्जा कर लिया था। लेकिन तिब्बती पूर्ण आजादी की मांग को छोड़कर सिर्फ वास्तविक स्वायत्तता की मांग कर रहे हैं।

सिक्योंग पेंपा त्सेरिंग ने अपनी जर्मनी एवं अमरीका की यात्रा में मध्यममार्ग नीति को जोरदार तरीके से उठाते हुए विष्वास व्यक्त किया है कि विभिन्न देषों के सामूहिक सहयोग एवं समर्थन से तिब्बत समस्या का स्वीकार्य समाधान जरूर निकलेगा। उम्मीद है कि मई में अपनी कनाडा यात्रा के समय भी वे मध्यममार्ग नीति के पक्ष में वातावरण को ज्यादा मजबूत करेंगे। तिब्बती बस्तियों के अपने प्रवास में कल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा तथा भावी कार्यक्रमों पर चर्चा के साथ ही वे मध्यममार्ग नीति के प्रति प्रतिबद्धता को ज्यादा सुदृढ़ करते हैं। परिणामतः पंचेन लामा की शीघ्र रिहाई तथा तिब्बत समस्या के हल हेतु बढ़ता अन्तरराष्ट्रीय सहयोग एवं समर्थन प्रशंसनीय है।

परमपावन दलाई लामा की आध्यात्मिक सक्रियता ने भी तिब्बतियों एवं तिब्बत समर्थकों को नई ऊर्जा प्रदान की है। चीन के वुहान शहर से विश्वभर में फैली कोरोना महामारी ने दलाई लामा की आध्यात्मिक गतिविधि में भी बाधा डाली थी। खुशी की बात है कि कोरोना महामारी के कम होते ही वे फिर से सार्वजनिक दर्शन देने लगे हैं। उनके सार्वजनिक प्रवचनों में अनुयायियों की भीड़ बढ़ने लगी है। हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले की धर्मशाला में निर्वासित तिब्बत सरकार का मुख्यालय है और दलाई लामा का निवास भी। उन्होंने कांगड़ा के जिलास्तरीय अधिकारियों कलक्टर, एस पी, आदि को दर्शन दिये हैं। इसी अप्रैल में अनेक बौद्ध धर्मगुरु उनके दर्शन कर चुके। लद्दाख के थिक्से मठ के थिक्से रिंपोछे भी उनमें शामिल हैं। लद्दाख के पूर्व सांसद तथा लद्दाख बौद्ध संघ के अध्यक्ष थुप्तेन छेवांग ने दलाई लामा के दर्शन तथा आशीर्वाद प्राप्त कर उनसे प्रार्थना की कि वे जुलाई - अगस्त में लद्दाख आकर प्रवचन करें। दलाई लामा ने उन्हें लद्दाख आने का आश्वासन दिया है। इससे लोगों में खुशी की लहर है। कोरोना महामारी ने सबको ऑनलाइन और वर्चुअल प्रवचन की जंजीरों में जकड़ रखा था। अब प्रत्यक्ष प्रवचन - दर्शन - आशीर्वचन का सौभाग्य फिर से मिल गया। कोरोना महामारी के प्रकोप के बाद दलाई लामा की लद्दाख यात्रा धर्मशाला के बाहर पहली आधिकारिक यात्रा होगी।

दलाई लामा से मिलने राष्ट्रीय- अंतरराष्ट्रीय महानुभाव फिर से आने लगे हैं। इनमें पत्रकार, कलाकार, राजनेता, विद्वान्, धर्मगुरु तथा समाजसेवी शामिल हैं। इनमें नीतिनिर्माता और विभिन्न सरकारी एवं निजी संस्थानों के प्रतिनिधि भी शामिल हैं। चीन सरकार की दृष्टि में दलाई लामा एक आतंककारी तथा विघटनकारी व्यक्ति हैं। विस्तारवादी चीन के विपरीत विश्व के सभी लोकतांत्रिक देषों की दृष्टि में दलाई लामा शांति के लिये समर्पित धर्मगुरु हैं। वे शांति, अहिंसा, करुणा तथा सद्भाव जैसे मानवीय मूल्यों के प्रचारक हैं। तिब्बत पर अवैध कब्जा किये उपनिवेशवादी चीन के लिये भी उनके दिल में करुणा है। नोबल शांति पुरस्कार सहित अनेक राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कारों तथा सम्मानों को प्राप्त कर चुके दलाई लामा पर्यावरण-संरक्षण के प्रति समर्पित हैं। प्राचीन भारतीय परंपरा के अनुरुप उनका मत वसुधैव कुटुम्बकम का है। हठर्धिमता छोड़ चीन उनके विचारों को अपनाये तो इससे उसका भी कल्याण होगा।

प्रो. श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, तिजारा (राजस्थान)
मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

• भविष्य के लिए संवाद के प्रतिभागियों के साथ बैठक

dalailama.com, २२ अप्रैल २०२२

थेकछेन छोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। आज२२ अप्रैल शुक्रवार को पृथ्वी दिवस के अवसर परपरम पावन दलाई लामा ने 'भविष्य के लिए संवाद' में भाग लेने वालों के साथ मुलाकात की। इसका आयोजन यहां धर्मशाला में कई संगठनों द्वारा किया गया। परम पावन ने मुस्कुराते हुए कमरे में प्रवेश किया अतिथियों को 'सुप्रभात'कहकर उनका अभिवादन किया।

सबसे पहले जलवायु न्यूनीकरण अन्वेषक सोनम वांगचुक ने परम पावन को बर्फ का एक टुकड़ा भेंट किया। उन्होंने बताया कि यह बर्फ का टुकड़ा तिब्बती पठार पर जलवायु परिवर्तन की वर्तमान स्थिति को उजागर करने के लिए लद्दाख में करदुंगला दर्रे पर एक हिमनद से लिया गया है। इसे युवाओं की एक टीम द्वारा साइकिल, सार्वजनिक परिवहन और इलेक्ट्रिक वाहनों पर रखकर यह संदेश देने के लिए लाया गया है कि 'कृपया सरलता से जीवन- यापन करें, ताकि हम पहाड़ों में आसानी से रह सकें।'

परम पवन दलाई लामा के साथ पर्यावरणविद् सोनम वांगचुक

अपनी प्रतिक्रिया में परम पावन ने सभा से कहा, 'मैं इस बात को लेकर वास्तव में सराहना करता हूँ कि अधिक से अधिक लोग पर्यावरण के लिए चिंता दिखा रहे हैं। आखिरकार पानी ही हमारे जीवन का आधार है। आने वाले वर्षों में हमारी यह जिम्मेदारी बनती है कि हम उन महान नदियों के संरक्षण के लिए कदम उठाएं जो इतने सारे लोगों के लिए पानी का स्रोत हैं। मैंने अपने जीवनकाल में ही तिब्बत के अंदर बर्फबारी को साल दर साल कम होते देखा है. इसके परिणामस्वरूप तिब्बत की नदियों में पानी कम होता चला गया.

उन्होंने आगे कहा कि अतीत में हम पानी के मुद्दे को हल्के में लेते थे। हमने कभी महसूस नहीं किया कि यह कहां से आता है।इस पर ज्यादा विचार किए बिना हम इसका मनचाहा उपयोग कर सकते हैं। लेकिन अब हमें अपने जल स्रोतों के संरक्षण के बारे में अधिक सावधान रहने की आवश्यकता है। मेरा मानना है कि हमारे पास खारे पानी,समुद्र के पानी को मीठे पानी में बदलने की तकनीक है जिससे हम कई जगहों पर रेगिस्तानों को हरा-भरा कर सकते हैं और अधिक भोजन पैदा कर सकते हैं।

अब, यह सुनिश्चित करना हमारी ज़िम्मेदारी है कि आने वाली पीढ़ियां स्वच्छ पानी का आनंद लेती रहें। यह उनके प्रति करुणा व्यक्त करने का एक तरीका है। यदि हम प्रयास नहीं करते हैंतो हमारी दुनिया के रेगिस्तान बनने का खतरा है। अगर ऐसा होता है तो यह खूबसूरत नीला ग्रह पानी के बिना सिर्फ एक शुष्क,सफेद चट्टान बन कर रह जाएगा।

'मुझे यह बात बार-बार ध्यान में आती रहती है कि पानी के बिना हम जीवित नहीं रह सकते हैं। मेरे कुछ भारतीय मित्र कहते हैं कि एक उपाय यह है कि अधिक से अधिक पेड़ लगाएं और इससे मदद मिलेगी। मेरे मित्र सुंदरलाल बहुगुणा ने मुझसे लोगों को पौधे लगाने और उनकी देखभाल करने के लिए अधिक से अधिक प्रोत्साहित करने का वादा करने के लिए कहाऔर मैं उनकी इच्छा पूरी करने की कोशिश करता रहता हूं।

चेक गणराज्य के पूर्व पर्यावरण मंत्री मार्टिन बर्सिक ने परम पावन को पर्यावरणविदों के इस समूह को एक साथ लाने के लिए प्रेरित करने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने संवाद के फोकस के तौर पर चार विषयों की रूपरेखा तैयार की।

१. जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (आईपीसीसी) की नवीनतम रिपोर्ट में वर्णित ग्रह की स्थिति।

२. जलवायु संकट को दूर करने में पवन ऊर्जा और सौर ऊर्जा जैसी प्रौद्योगिकी की भूमिका।

३. कुछ पर्यावरणविद तिब्बत को तीसरे ध्रुव के तौर पर मानते हैं। लेकिन साथ ही उन्हें यह भी पता होना चाहिए कि इस तीसरे ध्रुव पर न केवल हिमनद घट रहे हैं,बल्कि इसके पर्माफ्रॉस्ट के पिघलने से मीथेन गैस भी उत्सर्जित हो रहे हैं।

४. ऊर्जा लोकतंत्र। ऊर्जा मॉडल को किस तरह से बदला जाए कि अधिक से अधिकआम लोग इससे सीधे तौर पर जुड़ सकें।

बर्सिक ने परम पावन से कहा कि भविष्य की सुरक्षा के लिए इस संवाद में आए विचारों को लेकर मिस्र में होनेवलीकॉप- २७ की बैठक के समय तिब्बती पठार की रक्षा और जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए कदम उठाने की दृष्टि से एक घोषणा-पत्र तैयार किया जाएगा।

परम पावन ने उत्तर दिया, 'पहले हम अपनी जलवायु को हल्के में लेते थे, इसे प्रकृति का हिस्सा ही मानते रहे। जलवायु में जो परिवर्तन हुए हैं, उनमें से कुछ हमारे व्यवहार के कारण हुए हैं,इसलिए हमें लोगों को जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार कारकों के बारे में शिक्षित करना होगा। हमें अपने पर्यावरण को संरक्षित करने के तरीकों पर अधिक ध्यान देना होगा। इसका मतलब है कि जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण पर इसके प्रभाव को सामान्य शिक्षा के हिस्से के रूप में समझना होगा।

केन्या की एक जलवायु कार्यकर्ता एलिजाबेथ वाथुती ने परम पावन से पूछा कि कैसे हम विश्व नेताओं से प्रेम और करुणा से कार्य करने की अपील कर सकते हैं। इस पर परम पावन ने वाथुती से कहा कि हम उन्हें बता सकते हैं कि दूसरों की देखभाल करके हम अनिवार्य रूप से अपना ख्याल रख सकते हैं। उन्होंने कहा कि समुदाय का स्वास्थ्य और खुशी व्यक्तियों के स्वास्थ्य और खुशी का स्रोत है।

परम पावन ने कहा, 'मैं जहाँ भी जाता हूं, मुस्कुराता रहता हूं और मानता हूं कि जिनसे मैं मिल रहा हूं वे मनुष्य होने के नाते मेरे जैसे ही हैं। अन्य लोगों को 'हम'और 'उन्हें' के संदर्भ में देखना और इस बात पर ध्यान देना कि दूसरे लोग मेरे जैसे नहीं हैं, वस्तुत: अविश्वास और अलगाव की ओर ले जाते हैं। यह सोचना कहीं अधिक उपयोगी है कि कैसे सभी सात अरब मनुष्य मूल रूप से एक जैसे हैं। क्योंकि हमें एक साथ रहना है।'

खुद को विज्ञान कथा लेखक के रूप में प्रस्तुत करने वाले किम स्टेनली रॉबिन्सन ने पूछा कि बौद्ध धर्म विज्ञान की मदद कैसे कर सकता है। परम पावन ने उन्हें बताया

कि वैज्ञानिक चित्त की शांति प्राप्त करने के तरीकों पर चर्चा करने में रुचि रखते हैं क्योंकि वे मानते हैं कि यदि मन अशांत है तो लोग खुश नहीं होंगे। उन्होंने मानसिक चेतना के बारे में और अधिक शोध करने और तर्क के आधार पर इसे प्रशिक्षित करने के लिए सीखने के लाभों पर जोर दिया।

कनाडा में रहनेवाली एक तिब्बती व्यवसायी महिला त्सेरिंग यांग्की जानना चाहती थीं कि कैसे व्यापार और अर्थव्यवस्था को जलवायु परिवर्तन की वैश्विक चुनौती के समाधान के लिए उपयोगी बनाया जा सकता है। परम पावन ने उत्तर दिया कि चूंकि प्रौद्योगि की भौतिक सुविधाओं में सुधार का एक कारक है,इसलिए चित्त को प्रशिक्षित करके हम सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन कर सकते हैं।

एनर्जी सिस्टम्स इनोवेटर अराश आज़मी ने कहा कि ऊर्जा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, फिर भीहम इसके लिए लड़ रहे हैं। उन्होंने पूछा कि हम प्रकृति,मनुष्य और अर्थव्यवस्था की जरूरतों को कैसे संतुलित कर सकते हैं।

परम पावन ने उत्तर दिया, 'भौतिक विकास आवश्यक और सहायक दोनों है। लेकिन जो हासिल किया जा सकता है उसकी एक सीमा होती है। इस बीच,अपने दिमाग को विकसित करना हमारी जरूरतों को पूरा करने का अधिक प्रभावी तरीका है। बुद्ध ने दूसरों की सेवा करने के इरादे से छह साल तक उपवास किया। तिब्बती योगी मिलारेपा और हाल में महात्मा गांधी सबसे कम सुविधाओं वाली परिस्थितियों में रहते थे, लेकिन दोनों ने मानसिक संतुष्टि का गहरा स्तर हासिल किया।'

उन्होंने कहा, 'प्रकृति के अति-शोषण के नकारात्मक परिणाम होते हैं। हमें एक व्यापक, दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाना होगा और मन की शांति को अपना प्राथमिक लक्ष्य बनाना होगा।'

नई दिल्ली स्थित द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट (टेरी) की महानिदेशक विभा धवन ने पूछा कि हम कैसे एक प्राकृतिक, स्वस्थ और सुरक्षित वातावरण में नैतिकता, करुणा और जीवन जीने का कम से कम भौतिकवादी तरीका अपना सकते हैं। परम पावन ने कहा कि मनुष्य के रूप में हम भाई-बहन हैं और हमें साथ रहना है। अगर ऐसा होता है और हम कड़े नियंत्रण में न रहकर स्वतंत्र रूप से रहते हैं और अन्य लोगों के विचारों के प्रति अधिक सहिष्णुता पैदा करते हैं तो यह बहुत प्रभावी रहेगा।

इस बैठक का संचालन कर रहीं अंतरराष्ट्रीय कूटनीति और संघर्ष समाधान में व्यापक अनुभव रखने वाली अंतरराष्ट्रीय वकील क्रिस्टा मींडर्स्मा ने परम पावन को बताया कि आज सभी प्रतिभागी उनसे मिलकर बहुत खुश हुए। उन्होंने कहा कि वे अब संवाद शुरू करेंगी और कार्रवाई का आह्वान करेंगी।

उन्होंने कहा, 'हमारे रहने का एकमात्र स्थान- इस ग्रह का अस्तित्व हमारे हाथ में है। अगर हम वापस आना चाहते हैं तो अगले साल पृथ्वी दिवस पर इसे करें।

परम पावन ने उत्तर दिया कि वे अगले दस से पंद्रह वर्षों तक समय-समय पर मिलने के लिए तैयार हैं।

• पृथ्वी दिवस पर परम पावन दलाई लामा का संदेश

dalailama.com, २२अप्रैल,२०२२

पृथ्वी दिवस २०२२ पर आइए याद रखें कि इंसान ही नहीं, जानवर, पक्षी और कीड़े-मकोड़े तक हर कोई सुखी जीवन जीना चाहता है। हम सभी को अपने सामूहिक अस्तित्व की चिंता करनी चाहिए। मनुष्य के रूप में हमारा अद्भुत दिमाग हमें अच्छा करने के लिए उल्लेखनीय अवसर प्रदान करता है।लेकिन, अगर हम देखें कि आज की दुनिया कैसी है तो हमें इसे और बेहतर बनाने के लिए तैयार रहना चाहिए। हमें अधिक समग्र शिक्षा की आवश्यकता है।एक ऐसी शिक्षा जिसमें दूसरों की भलाई के लिए करुणामय चिंता जैसे आंतरिक मूल्य शामिल हों।

हमारी दुनिया काफी हद तक एक-दूसरे पर अन्योन्याश्रित है। इसमें जलवायु संकट जैसी नई चुनौतियां शामिल हुई हैं जो हम सभी को प्रभावित करती हैं। साथ ही वैश्विक अर्थव्यवस्था में हमारी भागीदारी का अर्थ है कि हमें पूरी मानवता को ध्यान में रखना चाहिए। हमें पहले वैश्विक हित का ध्यान रखना होगा।

हमें जीवाश्म ईंधन पर अपनी निर्भरता को कम करने और ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों को अपनाने के लिए तत्काल कदम उठाने की जरूरत है। इसमें वायु ऊर्जा और सौर ऊर्जा शामिल हैं। हमें वनों की कटाई पर ध्यान देना चाहिए और पर्यावरण की बेहतर सुरक्षा करनी चाहिए। हमें अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनकी देखभाल करने की आवश्यकता है। मैंने अपने जीवन में पहले तिब्बत में और बाद में धर्मशाला में बर्फबारी में गिरावट देखी है। दरअसल, कुछ वैज्ञानिकों ने मुझे बताया है कि तिब्बत जैसी जगहों का अंततः रेगिस्तान बनने का खतरा है। इसलिए मैं तिब्बत के नाजुक पर्यावरण की सुरक्षा के लिए आवाज उठाने के लिए प्रतिबद्ध हूं।

हमारा जीवन उम्मीदों पर आधारित है।हमारी इच्छा होती है कि चीजें ठीक तरह से चलती रहें। उम्मीदों का संबंध भविष्य से है। हालांकि भविष्य के बारे में कुछ भी निश्चित तौर पर कहा नहीं जा सकता है। हम आशान्वित रहते हैं, जो निराशावादी होने से कहीं बेहतर है। यहां तक कि जब ग्लोबल वार्मिंग की तीव्रता में वृद्धि हो रही है, कई युवा खासतौर पर इसका समाधान खोजने और उसे साझा करने के लिए मिलकर काम कर रहे हैं। वे हमारी आशा हैं।

आजकल जब हमें जलवायु संकट के कारण गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है तो हमें बदलाव के लिए समय सारिणी निर्धारित करके एक-दूसरे की मदद करनी होगी। मनुष्य के रूप में इस ग्रह पर रहते हुएहमें एक साथ खुशी-खुशी रहने का प्रयास करना चाहिए। जलवायु परिवर्तन का खतरा राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं है। यह हम सभी को प्रभावित करता है। हमें प्रकृति और ग्रह की रक्षा के लिए काम करना चाहिए, जो हमारा एकमात्र घर है।

• जलवायु कार्रवाई पर संवाद के प्रतिभागियों से मिले परम पावन दलाई लामा

tibet.net, २२ अप्रैल, २०२२

धर्मशाला। परम पावन दलाई लामा ने आज २२अप्रैल की सुबह अपने आवास पर जलवायु कार्यकर्ताओं और प्रतिभागियों को विशेष प्रवचन किया। २२ अप्रैल को मनाए गए पृथ्वी दिवस के उपलक्ष्य में 'डायलॉग फॉर अवर फ्यूचरः ए कॉल टू क्लाइमेट एक्शन'शीर्षक से जलवायु कार्रवाई पर तीन दिवसीय संवाद के लिए प्रतिभागी यहां धर्मशाला में हैं।

परम पवन दलाई लामा के साथ जलवायु कार्यकर्ता

लद्दाख के सोनम वांगचुक जैसे जलवायु परिवर्तन के पैरोकार उन प्रतिभागियों में शामिल हैं, जिन्होंने ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लेशियरों के तेजी से पिघलने के मुद्दे पर जोर देने के लिए परम पावन को लद्दाख के खारदुंगला दर्रे के ग्लेशियर से एक बर्फ का टुकड़ा भेंट किया।

जलवायु कार्रवाई पर तीन दिवसीय सम्मेलन की सह-मेजबानी तिब्बत नीति संस्थान, यूआरएसी रिसर्च, चेक सपोर्ट तिब्बत और इंटरनेशनल कंपेन फॉर तिब्बत (आईसीटी) द्वारा की जा रही है।

• सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग ने तिब्बत के लिए अमेरिका के विशेष समन्वयक उज़रा ज़ेया से शिष्टाचार भेंट की

tibet.net, २६ अप्रैल, २०२२

धर्मशाला। सीटीए के सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग ने सोमवार, २५ अप्रैल २०२२ को अमेरिका पहुंचने पर विदेश विभाग के कार्यालय में तिब्बत के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक उजरा ज़ेया से शिष्टाचार भेंट की।

सिक्योंग की आधिकारिक यात्रा के दौरान वाशिंगटन डीसी में तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि डॉ. नामग्याल चोएडुप और ताशी ल्हुनपो मठ का प्रतिनिधित्व करने वाले उपाध्याय ज़िक्याब रिनपोछे भी साथ थे। २५ अप्रैल को तिब्बत के ११वें पंचेन लामा की ३३वीं जयंती भी मनाई गई।

उपाध्याय ज़िक्याब रिनपोछे के अनुसार, प्रतिनिधिमंडल ने विशेष समन्वयक से चीन-तिब्बत संघर्ष को जल्द से जल्द हल करने और परम पावन दलाई लामा की शीघ्र तिब्बत वापसी में सहायता करने की अपील की। बैठक में एनरॉलमेंट बिल 'एचआर १६४६'के प्रभावी निष्पादन पर भी ध्यान केंद्रित किया गया, जो चीन में अमेरिकी राजदूत से मांग करता है कि वह तिब्बत के लंबे समय से लापता पंचेन लामा से मिलें और उन्हें 'धार्मिक अधिकार पुरस्कार' प्रदान कर उनको मान्यता प्रदान करें।

सिक्योंग पेन्पा छेरिंग और तिब्बत के लिए अमेरिका की विशेष समन्वयक उज़रा ज़ेया

विशेष समन्वयक के साथ बातचीत के बाद पंचेन लामा की जयंती मनाने के लिए तिब्बती प्रतिनिधिमंडल ने 'एंबेसेडर-ऐट-लॉर्ज फॉर इंटरनेशनल रिलिजियस फ्रीडम' रशद हुसैन से भी मुलाकात की।

पंचेन लामा की जयंती पर आयोजित समारोह को वाशिंगटन डीसी स्थित तिब्बत कार्यालय और 'इंटरनेशनल कंपेन फॉर तिब्बत' की ओर से संयुक्त रूप से मनाया गया। इस समारोह में अमेरिकी कांग्रेस (अमेरिकी संसद) की सदस्य इलियाना रोस-लेहटिनेन, नूरी तुर्केल (यूएससीआरआईएफ आयुक्त), केली करी (वैश्विक महिला मुद्दे के लिए पूर्व अमेरिकी ऐंबेसेडर-एट-लार्ज), स्कॉट्स बुस्बी (ब्यूरो ऑफ़ डेमोक्रेसी, ह्यूमन राइट्स एंड लेबर के कार्यवाहक प्रिंसिपल ड्यूटी असिस्टेंट सेक्रेटरी)और सोफी रिचर्डसन (ह्यूमन राइट्स वॉच मेंचीन के लिए निदेशक) ने भी भाग लिया।

उसी दिन सुबह सिक्योंग ने अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद में हिन्द-प्रशांत क्षेत्र मामलों के समन्वयक कर्ट कैंपबेल से भी मुलाकात की।

निर्वासित तिब्बती नेता ने वाशिंगटन की पहली आधिकारिक यात्रा पूरी की

• सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग ने प्रतिनिधि सभा की स्पीकर नैन्सी पेलोसी और अन्य अमेरिकी सांसदों से मुलाकात की।

rfa.org, २९ अप्रैल,२०२२

निर्वासित तिब्बती नेता पेन्पा त्सेरिंग ने गुरुवार को प्रतिनिधि सभा की स्पीकर नैन्सी पेलोसी और अन्य सांसदों के साथ बैठक और शुक्रवार शाम को निर्धारित सार्वजनिक वार्ता के साथ वाशिंगटन डीसी की अपनी पहली आधिकारिक यात्रा पूरी कर ली।

सिक्योंग त्सेरिंग (भारत स्थित निर्वासित तिब्बती सरकार- केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के निर्वाचित प्रमुख)ने मंगलवार को अमेरिकी विदेश विभाग में तिब्बती मुद्दों के लिए विशेष समन्वयक उज़रा ज़ेया के साथ बातचीत के साथ अपनी यात्रा शुरु की। विभाग ने त्सेरिंग के स्वागत में दोपहर के भोजन की भी मेजबानी की जिसमें चेक गणराज्य, डेनमार्क, कनाडा, इंग्लैंड और अन्य देशों के राजदूतों ने भाग लिया।

गुरुवार को पेलोसी के साथ त्सेरिंग की बैठक में भाग लेने वालों में इंटरनेशनल कंपेन फॉर तिब्बत (आईसीटी) बोर्ड के चेयरमैन रिचर्ड गेर,कार्यवाहक अध्यक्ष भुचुंग त्सेरिंग,तिब्बत के ताशिलहुनपो मठ की भारत स्थित शाखा के मठाधीश ज़िग्यब रिनपोछे,अमेरिकी सांसद जिम मैकगवर्न और निर्वासित तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा के प्रतिनिधि नमग्याल चोएडुप शामिल थे।

बैठक के बाद आरएफए से बात करते हुए चोएडुप ने बताया कि इस सप्ताह हुई त्सेरिंग की वाशिंगटन की यात्रा उनकी पहली यात्रा थी।

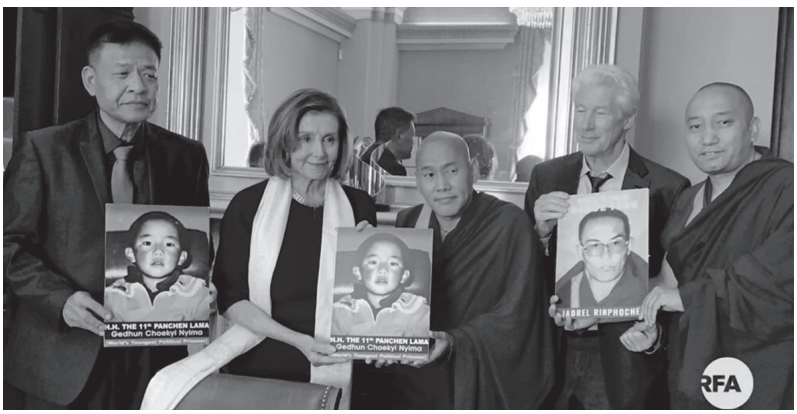

सीटीए के सिक्योंग पेन्पा छेरिंग, अमेरिकी निचले सदन की स्पीकर नैन्सी पेलोसी और आईसीटी के चेयरमैन रिचर्ड गेर

भारत के धर्मशाला स्थित निर्वासित तिब्बती संसद के पूर्व स्पीकर त्सेरिंग ने ११ अप्रैल, २०२१ को सिक्योंग पद के लिए दुनिया भर के तिब्बती समुदायों में चुनाव लड़ा था।

चोएडुप ने गुरुवार की बातचीत को 'निर्णायक और रचनात्मक' बतायाऔर तिब्बतियों को निरंतर अमेरिकी समर्थन के लिए पेलोसी के प्रति आभार जताया। चोएडुप ने कहा, 'बैठक में चीन-तिब्बत संघर्ष को कैसे हल किया जाए, इस बारे में भविष्य की कार्रवाई को लेकर सामूहिक निर्णयों पर भी चर्चा हुई।'

पूर्व में एक स्वतंत्र राष्ट्र रहे तिब्बत पर आक्रमण किया गया था और ७० से अधिक वर्षों पहले बल द्वारा चीन में शामिल किया गया था। उसके बाद से तिब्बती अक्सर चीनी अधिकारियों द्वारा भेदभाव और मानवाधिकारों के हनन की शिकायत करते रहते हैं। चीन की नीतियों का उद्देश्य तिब्बत की राष्ट्रीय और सांस्कृतिक पहचान को मिटाना है।

आईसीटी बोर्ड के अध्यक्ष रिचर्ड गेर ने गुरुवार को आरएफए से बात करते हुए कहा, 'हम उन मिथकों या आख्यानों को तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं जो चीनी सरकार कई दशकों से तिब्बत को चीन का हिस्सा होने के बारे में पेश कर रही है,जो सच नहीं है।'

गेर ने कहा, 'हम चीनऔर परम पावन दलाई लामा के बीच वास्तविक संवाद शुरू कराने पर जोर देने की कोशिश कर रहे हैं।'

दलाई लामा और भारत स्थित निर्वासित तिब्बत सरकार के केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने बीजिंग के साथ बातचीत के लिए 'मध्यम मार्ग' दृष्टिकोण का प्रस्ताव दिया है जो अब तिब्बत को चीन के हिस्से के रूप में स्वीकार करता है लेकिन तिब्बती भाषा, धार्मिक और सांस्कृतिक अधिकारों के लिए अधिक स्वतंत्रता का आग्रह करता है।

पूर्व में निर्वासित आध्यात्मिक नेता दलाई लामा के दूतों और उच्च स्तरीय चीनी अधिकारियों के बीच २००२ से नौ दौर की वार्ता हुई,लेकिन २०१० में यह रुक गई और फिर कभी नहीं हुई।

हाउस फॉरेन अफेयर्स कमेटी के रैंकिंग सदस्य और टेक्सास के प्रतिनिधि माइकल मैककॉल ने कहा, 'दलाई लामा के समर्थक सांसद दलाई लामा को वीडियो द्वारा अमेरिकी कांग्रेस के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए देखना पसंद करेंगे।'

मैककॉल ने कहा, 'अमेरिकी लोग तिब्बती लोगों और दलाई लामा के साथ खड़े हैं जो हमारे समय के सबसे महान आध्यात्मिक नेताओं में से एक हैं।'

पेन्पा त्सेरिंग ने शुक्रवार शाम को अपनी वाशिंगटन यात्रा का समापन जॉर्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय में तिब्बत-चीन संवाद पर पैनल चर्चा और डीसी-क्षेत्र के तिब्बती समुदाय के साथ एक सार्वजनिक वार्ता के साथ किया। कनाडा में बैठकों में जाने से पहले वे फ़िलाडेल्फ़िया और न्यूयॉर्क में तिब्बत समुदायों के बीच दौरा करेंगे।

• १६वें कशाग ने तिब्बती समुदाय में युवा बेरोजगारी को कम होने की पुष्टि की: मैनपाट तिब्बती बस्ती में सिक्योंग

dalailama.com, १३ अप्रैल, २०२२

मैनपाट तिब्बती बस्ती में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग

मैनपाट। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग वर्तमान में दिल्ली, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र स्थित तिब्बती बस्तियों की एक सप्ताह की आधिकारिक यात्रा पर हैं।

मंगलवार, १२ अप्रैल को मैनपाट में फेंडेलिंग तिब्बती बस्ती के अपने दौरे में सिक्योंग ने १६वें कशाग के उद्देश्यों के बारे में तिब्बत निवासियों को संबोधित किया और अब तक की गतिविधियों पर रिपोर्ट दी। पिछले साल जून में पद संभालने के बाद सिक्योंग ने लद्दाख, कलिम्पोंग, दार्जिलिंग, गंगटोक और उत्तराखंड की तिब्बती बस्तियों सहित भारत भर में कई बस्तियों का दौरा किया। वह जून में पूर्वोत्तर भारत में तिब्बती बस्तियों का दौरा करेंगे।

यहां के सेटलमेंट अधिकारी तेनज़िन धादोन ने सबसे पहले परिचयात्मक भाषण दिया और बस्ती की संक्षिप्त वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी। अपने मुख्य भाषण में सिक्योंग ने अपने पांच साल के कार्यकाल के दौरान कम से कम दो बार सभी बस्तियों का दौरा करने की इच्छा व्यक्त की।

सिक्योंग ने अपने संबोधन में सबसे पहले तिब्बत के अंदर की मौजूदा स्थिति की गंभीरता पर प्रकाश डाल। उन्होंने संक्षेप में कुछ उदाहरण देते हुए बताया कि तिब्बत के अंदर चीनी सरकार तिब्बती भाषा का दमन कर रही है, निजी स्कूलों को बंद कर रही है धार्मिक स्वतंत्रता पर पाबंदियां लगा रही है। सिक्योंग ने सभा में इस संघर्ष को हल करने के लिए मध्यम मार्ग दृष्टिकोण के लाभों को गिनाया।

बाद में शाम को सिक्योंग ने बेरोजगार युवाओं के एक समूह को संबोधित किया, जहां उन्होंने सीटीए के अधिकार क्षेत्र के तहत आने वाले स्कूलों के सीटीएसए स्कूलों में परिवर्तित होने की सूचना दी, जिसकी मंजूरी पिछले साल मई में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालयद्वारा पारित की गई थी। इसके अलावा, उन्होंने १६वें कशाग के मुख्य उद्देश्यों में से एक के रूप में युवा बेरोजगारी के उन्मूलन के विषय को उठाया, जिसमें अधिक व्यावसायिक और व्यापार कौशल के प्रावधान सहित बस्तियों में व्यवसाय शुरू करने वाले तिब्बती उद्यमियों के लिए ऋण उपलब्ध कराने की कशाग की योजना शामिल है।

• न्गाबा की कीर्ति में ८१ वर्षीय ताफून ने आत्मदाह किया

tibet.net, ०२ अप्रैल २०२२

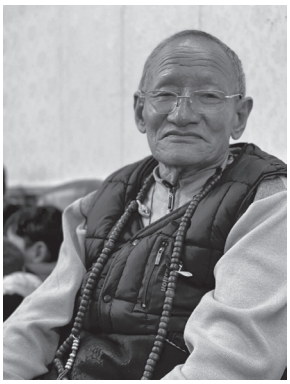

८१ वर्ष की उम्र में दिवंगत ताफून

धर्मशाला।तिब्बती नव वर्ष से कुछ दिन पहले पोटाला महल के सामने आत्मदाह करने वाले प्रसिद्ध तिब्बती गायक त्सेवांग नोरबू की मौत पर दुनिया भर के तिब्बतियों द्वारा शोक जताते हुए महीना भर ही हुआ था कि तिब्बत से एक और आत्मदाह की दुखद सूचना आ गई। नवीनतम समाचार रिपोर्ट में विश्वसनीय स्रोतों के हवाले से पुष्टि हुई है कि कुछ दिनों पहले तिब्बत के न्गाबा काउंटी (अब चीन के सिचुआन प्रांत में शामिल) में ८१ वर्षीय ताफून ने आत्मदाह कर लिया है।

चीनी सरकार के दमन के विरोध में २७ मार्च को ताफून ने कीर्ति मठ के पास स्थित एक पुलिस थाने के सामने आत्मदाह कर लिया। बताया गया कि आत्मदाह के प्रयास के बाद पुलिस ताफुन को ले गई। हालांकि बाद में हिरासत में उनकी मौत हो गई।

पिछले कई वर्षों में विशेष रूप से मार्च मेंचीनी सरकार ने न्गाबा काउंटी में कड़े प्रतिबंध थोपे हैं और दमन चक्र चलाए हैं जहां आत्मदाह के अक्सर मामले सामने आते हैं। चीनी अधिकारियों ने संचार पर लगभग पूरी तरह से सेंसरशिप लगा दी है, इसलिए इस तरह के विरोधों के बारे में खबरें और उनकी विस्तृत जानकारी अक्सर वर्षों तक अज्ञात रह जाती हैं।

८१वर्षीय ताफून न्गाबा काउंटी के मेरुमा खानाबदोश गांव के रहने वाले थे। वह हमेशा चीन की दमनकारी नीतियों और तिब्बतियों के साथ अमानवीय व्यवहार के विरोध में मुखर रहे। पिछले साल अपने ८०वें जन्मदिन पर ताफून ने कहा था, 'यह निश्चित है कि परम पावन दलाई लामा के आशीर्वाद से तिब्बत पर खुशी का सूरज चमकेगा। तिब्बतियों को सहस्राब्दियों तक हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

• बच्चों को पढ़ाने के लिए चीन तिब्बती माता-पिता को चीनी भाषा कार्यशाला में जबरन भेज रहा

tibet.net, १४ अप्रैल, २०२२

चीनी सरकार द्वारा जबरन चीनी भाषा सिखाने वाली कार्यशाला में तिब्बती स्कूली छात्रों के माता-पिता

एक हालिया रिपोर्ट के अनुसारचीनी अधिकारी तिब्बती बच्चों के माता-पिता को चीनी भाषा की अच्छी समझ बनाने के लिए कार्यशालाओं और कक्षाओं में भाग लेने के लिए मजबूर कर रहे हैं। ये कार्यशालाएं चीन सरकार के 'भाषा आत्मसात' अभियानों का हिस्सा हैं जहां तिब्बती माता-पिता को निर्देश दिया जा रहा है कि वे अपने स्कूल जाने वाले बच्चों को चीनी भाषा सिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

नई रणनीति के तहत तिब्बती माता-पिता को इन भाषा कक्षाओं और कार्यशालाओं में जुड़कर चीनी भाषा सीखने के लिए कड़े प्रयास करने को कहा जा रहा है। ये लोग ज्यादातर खानाबदोश और किसान हैं। चीनी भाषा को बढ़ावा देने की नई जिम्मेदारी देना ओर उनसे अपने बच्चों को चीनी में बोलने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए मजबूर करना अधिक चिंता का विषय है। रिपोर्ट में कहा गया है कि माता-पिता के लिए उनकी नई भूमिका में भाषा के बारे में बनाए गए नियमों और कानूनों की अद्यतन जानकारी रखने को भी जरूरी बनाया गया है।

'तिब्बत वॉच' की एक रिपोर्ट में पुष्टि की गई है कि इस साल फरवरी से मार्च तक गोलोग तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर के एक माध्यमिक विद्यालय में माता-पिता के लिए लगभग १६ अनिवार्य कार्यशालाएं आयोजित की गईं। एक सूत्र के हवाले से रिपोर्ट में कहा गया है कि ९ मार्च को आयोजित की गई एक कार्यशाला का उद्देश्य 'न केवल चीनी भाषा पढ़ाना बल्कि चीनी शिक्षा के माध्यम से (प्रतिभागियों के) विचारों में सुधार करना' भी था। माता-पिता को निर्देश दिया गया था कि वे पहले 'सामान्य' भाषा को अच्छी तरह से सीखें और उसमें सुधार करेंऔर फिर 'चीनी योजना'में अपने योगदान के तौर पर अपने बच्चों को भाषा सीखने में सहायता करें। न्यिमा काउंटी के आधिकारिक वीचैट पर स्थानीय अधिकारियों द्वारा रिपोर्ट के अनुसार तथाकथित तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र में न्यिमा काउंटी मेंइसी तरह की एक बैठक १२मार्च को हुई थी। काउंटी अधिकारियों द्वारा आयोजित बैठक में स्थानीय अधिकारियों, पार्टी के सदस्यों और स्थानीय तिब्बतियों को 'राष्ट्रीय भाषा कार्यशाला और परीक्षण' के बारे में चर्चा करने के लिए बुलाया गया था। भाषा सिखाने के अलावाउपस्थित लोगों को शी जिनपिंग के विचारों के बारे में भी बताया गया और उनसे अपने गांवों में लौटने के बाद सीखी गई जानकारी का प्रचार-प्रसार करने का आग्रह किया गया।

'चीनी मेरी मातृभाषा है' का प्रचार

चीनी सरकार ने पिछले दिसंबर में लक्ष्य तय किया था कि २०२५ तक चीन की कुल आबादी का कम कम ८५ प्रतिशत आबादी चीनी भाषा को अपनी मातृभाषा के रूप में स्वीकार कर ले। इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए तिब्बत और आंतरिक मंगोलिया के स्कूलों में अन्य भाषाओं को कमजोर करने की नीतियां सख्ती से लागू की जा रही हैं। कक्षाओं की दीवारों पर 'चीनी मेरी मातृभाषा है' जैसे नारों वाले पोस्टर देखे जा सकते हैं। एक अन्य रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि इस तरह के प्रचार का उद्देश्य स्कूली बच्चों को बहुत कम उम्र से ही यह विश्वास दिलाना है कि चीनी उनकी मातृभाषा है।

उसी रिपोर्ट में एक अज्ञात तिब्बती स्रोत के हवाले से कहा गया है कि नई नीति 'स्कूल के शिक्षकों और बुजुर्गोंको चीनी भाषा में पारंगत बनाने की बात करती है। इसके अलावा, अब रोजगार पाना बहुत हद तक इस बात पर निर्भर करता है कि आप चीनी भाषा बोल सकते हैं या नहीं।'तिब्बती स्कूलों की वर्तमान स्थिति के बारे में पूछे जाने पर स्रोत ने चीन की दोषपूर्ण शिक्षा नीतियों के माध्यम से लगातार तिब्बती भाषा को निशाना बनाए जाने पर नाराजगी व्यक्त की। सूत्र ने आगे उल्लेख किया कि स्कूलों में शिक्षकों, छात्रों और कर्मचारियों को केवल चीनी भाषा में एक- दूसरे के साथ संवाद करना अनिवार्य कर दिया गया है। दीर्घकाल में ऐसी नीतियों का तिब्बती भाषा के अस्तित्व पर विनाशकारी प्रभाव पड़ेगा, जो धीरे-धीरे तिब्बतियों को अपने दैनिक जीवन में चीनी भाषा के उपयोग को आत्मसात करने के लिए मजबूर कर देगा।

तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर के न्गाबा (चीनी: अबा) के स्कूलों को धीरे-धीरे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और चीनी भाषा और संस्कृति का सम्मान करने के लिए अनुकूल बनाया जा रहा है। आधिकारिक रिपोर्टों के अनुसार, 'छात्रों के कल्याण और सुरक्षा को बनाए रखने' के नाम पर 'राजनीतिक शिक्षा' कक्षाओं के संचालन के लिए बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों को स्कूलों और किंडरगार्टन में तैनात किया गया है। 'सही व्यवहार के निर्माण' के लिए ये पुलिसकर्मी स्कूल परिसर में दैनिक निगरानी रखते हैं और चीनी सरकार की नीतियों को ध्यान में रखते हुए बच्चों में व्यवहार विकसित करने के लिए उन्हें प्रेरित करते हैं।

• डिप्टी स्पीकर के नेतृत्व वाले तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल का दिल्ली में तिब्बत के पक्ष में अभियान

tibet.net, ०७ अप्रैल, २०२२

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री एच. डी. देवेगौड़ा के साथ तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल

नई दिल्ली।भारतीय संसद के बजट सत्र के दौरान निर्वासित तिब्बती संसद की उपाध्यक्ष डोल्मा त्सेरिंग तेखंग के नेतृत्व में तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल का तिब्बत मुद्दे को लेकर अभियान चल रहा है। इस तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल में सांसद- तेन्पा यारफेल, खेंपो काडा न्गोडुप सोनमऔर फुरपा दोरजी ग्यालधोंग शामिल हैं। प्रतिनिधिमंडल ने पिछले तीन दिनों में भारत के विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं और मंत्रियों समेत ३८ भारतीय सांसदों के साथ बैठकें कीं।

भारतीय सांसदों के साथ अपनी बैठकों के दौरान प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने उन्हें तिब्बत के अंदर की गंभीर स्थिति से अवगत कराया, जो चीन द्वारा मुक्त और विकसित किए जाने के बुलंद दावों के बावजूद गंभीर और चिंताजनक बनी हुई है।

२००९ के बाद से असहमति व्यक्त करने के स्थान के लगातार सिकुड़ते जाने के कारण समाज के हर क्षेत्र के १५७ से अधिक तिब्बतियों ने चीन की दमनकारी नीतियों के विरोध में आत्मदाह कर लिया है। चीन की दमनकारी नीतियों में राजनीतिक दमन, सांस्कृतिक आत्मसात, जनसंख्या का स्थानांतरण, नस्लीय भेदभाव, आर्थिक और शैक्षिक रूप से नजरअंदाज करना, बड़े पैमाने पर पर्यावरण विनाश और खनिज, जल और वन संसाधनों के अंधाधुंध दोहन शामिल है। इन नीतियों ने पूरे तिब्बती पठार को नष्ट कर दिया है जिससे विश्व की जलवायु भी बड़े पैमाने पर प्रभावित हुई है।

डिप्टी स्पीकर के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने भारतीय संसद के माननीय सदस्यों से तिब्बती पहचान और उसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के अस्तित्व के सवाल पर अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाने और तिब्बत में अधिकारों का उल्लंघन, धार्मिक दमन जैसे मुद्दों पर चिंता व्यक्त करने में विश्व नेताओं के साथ शामिल होने का आग्रह किया। इसी तरह, उन्होंने भारतीय सांसदों से परम पावन दलाई लामा के दूतों और कम्युनिस्ट चीन के बीच बातचीत की जल्द बहाली का समर्थन करने का आग्रह किया। प्रतिनिधिमंडल ने इन सांसदों से संयुक्त राष्ट्र के मंच 'कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (यूएनएफसीसीसी)' द्वारा वैश्विक जलवायु परिवर्तन में तिब्बती पठार पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को समझने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान अध्ययन कराने का आग्रह करने में विश्व के नेताओं के साथ जुड़ने के लिए भी अनुरोध किया।

०४ अप्रैल को तिब्बती सांसदों ने दिल्ली में प्रमुख भारतीय राजनीतिक दलों के मुख्यालयों का दौरा करके अपने 'तिब्बत एडवोकेसी अभियान' की शुरुआत की। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) से अपने अभियान की शुरुआत करते हुए तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने एनसीपी के राष्ट्रीय सचिव श्री एस.आर. कोहली से मुलाकात की और उन्हें तिब्बत मुद्दे पर जानकारी दी। इसके बाद प्रतिनिधिमंडल ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा), समाजवादी पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई), जनता दल-यूनाइटेड (जेडीयू), नेशनल पीपुल्स पार्टी (एनपीपी), शिरोमणि अकाली दल (दिल्ली राज्य) और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) के मुख्यालयों का दौरा किया। इस दौरान तिब्बती सांसदों ने भाकपा के राष्ट्रीय समिति सदस्य श्री चिदंबरम रवि, जदयू के महासचिव श्री अफाक अहमद खान, एनपीपी के राष्ट्रीय सचिवश्री सोनेलाल कोलऔर विभिन्न राजनीतिक दलों के अन्य अधिकारियों के साथ बहुत सार्थक चर्चा की।

तिब्बती सांसदों को अपने तिब्बत समर्थन अभियान के पहले दिन पूर्व पर्यटन मंत्री और कांग्रेस की पूर्व सांसद श्रीमती रेणुका चौधरी, तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) के लोकसभा सांसद श्री केसिनेनी श्रीनिवास, भारत के पूर्व प्रधान मंत्री और वर्तमान राज्यसभा सदस्य और जनता दल (सेक्युलर) के अध्यक्ष श्री एच. डी. देवेगौड़ा और भाजपा के राज्यसभा सांसद श्री नरेश बंसल से मिलने का अवसर मिला।

इसी तरहअभियान के दूसरे दिन की शुरुआत बीजू जनता दल के राज्यसभा सांसदऔर तिब्बत के लिए सर्वदलीय भारतीय संसदीय फोरम के संयोजक श्री सुजीत कुमारके साथ सुबह के नाश्ते के समय तिब्बत के मुद्दे से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा के साथ हुई। इसके बाद आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद श्री संजय सिंह, बीजू जनता दल के लोकसभा सांसद श्री चंद्रशेखर साहू, भाजपा के लोकसभा सांसद श्री प्रधान बरुआ, श्री मितेश पटेल, कांग्रेस के पूर्व सांसद और वर्तमान में कांग्रेस महासचिव श्री पी.एल. पुनिया और कांग्रेस के राज्यसभा सांसद श्री सैयद नसीर हुसैन के साथ बैठक हुई।

उसी दिन प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों को केंद्रीय कानून और न्याय मंत्री श्री किरेन रिजिजू से मिलने का अवसर मिला,जिन्होंने तिब्बती संसद सदस्यों के अनुरोध पर भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के सांसदों के साथ अगले दिन बैठक की व्यवस्था कर दी। अगले दिन उपसभापति ने तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया और उन्हें श्री किरेन रिजिजू के सहयोग से पूर्वोत्तर भारत के २० से अधिक सांसदों से मिलने का अवसर मिला। इनमें कानून और न्याय मंत्री श्री किरेन रिजिजू, बंदरगाह, जहाजरानी, जलमार्ग और आयुष मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस और श्रम और रोजगार राज्य मंत्री श्री रामेश्वर तेली, शिक्षा और विदेश मामलों के राज्य मंत्री डॉ राजकुमार रंजन सिंह, भाजपा के राज्यसभा सांसद श्री भुवनेश्वर कलिता, श्री कामाख्या प्रसाद तासा, श्री पबित्रा मार्गेरिटा, असम गण परिषद के राज्यसभा सांसद श्री बीरेंद्र प्रसाद वैश्य, यूपीएल के राज्यसभा सांसद श्री रवंगवरा नारज़ारी, भाजपा के लोकसभा सांसद श्री होरेन सिंग बे,श्री तोपोन कुमार गोगोई, श्रीमती रानी ओझा, डॉ. राजदीप रॉय, कांग्रेस के लोकसभा सांसद श्री प्रद्युत बोरदोलोई, श्री अब्दुल खालिक, एनपीएफ के लोकसभा सांसद श्री एस. लोरहो फोज़े, एनपीपी के लोकसभा सांसद डॉ. वानवीरॉय खार्लुखी, कांग्रेस के लोकसभा सांसद श्री विंसेंट पाला, भाजपा के राज्यसभा सांसद श्रीमती एस. फांगनोन कोन्याक, एनडीपीपी के राज्यसभा सांसद श्री येप्थोमी तोखेहो, एसकेएम के लोकसभा सांसद श्री सुब्बा इंद्रा हैंग, भाजपा के राज्यसभा सांसदडॉ. माणिक साहा और भाजपा के लोकसभा सांसद श्री रेबती त्रिपुराशामिल रहे।

तिब्बत समर्थन अभियान को जारी रखते हुएतीसरे दिन६ अप्रैल को तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने संसद पुस्तकालय परिसर का दौरा किया, जहां प्रतिनिधिमंडल ने तेलंगाना राष्ट्र समिति के लोकसभा सांसद और पुस्तकालय पर संसदीय समिति के अध्यक्ष श्री नामा नागेश्वर राव और तेलंगाना राष्ट्र समिति के लोकसभा सांसद डॉ. बी. वेंकटेश नेथाके साथ मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल का पुस्तकालय परिसर और संग्रहालय का दौरा वहां की निदेशक श्रीमती रचना शर्मा और सचिव श्री प्रसनजीत सिंह (आईएएस) द्वारा कराया गया। उनके साथ अन्य स्टाफ भी थे। उसके बाद उसी दिन प्रतिनिधिमंडल को मिजो नेशनल फ्रंट के लोकसभा सांसद श्री सी. लालरोसंगाऔर कांग्रेस के पूर्व राज्यसभा सांसद श्री रिपुन बोरा से मिलने का भी अवसर मिला।

• तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने ताइवान, अमेरिका और अन्य देशों के दूतावासों के दौरे के साथ तिब्बत एडवोकेसी अभियान का समापन किया

tibet.net, ०९ अप्रैल, २०२२

नई दिल्ली स्थित ताइवान दूतावास अधिकारियों के साथ तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल

नई दिल्ली। उपसभापति डोल्मा सेरिंग तेखांग के नेतृत्व में तिब्बती सांसदों- तेनपा यारफेल, खेंपो काडा नगेडुप सोनम, और फुरपा दोरजी ग्यालधोंग के तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने ४३ भारतीय सांसदों और मंत्रियों से मिलकर और ताइवान, संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य देशों के दूतावासों का दौरा कर अपने तिब्बत वकालत अभियान को सफलतापूर्वक संपन्न किया। ०४ से ०८ अप्रैल तक निर्धारित वकालत अभियान को उनकी दिल्ली यात्रा का अधिकतम लाभ उठाने के लिए दो अतिरिक्त दिनों के लिए बढ़ा दिया गया था।

तिब्बती प्रतिनिधिमंडल अपने अभियान के पहले तीन दिनों में मंत्रियों समेत विभिन्न राजनीतिक दलों के ३७ भारतीय सांसदों तक पहुंचा और तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन, पर्यावरण क्षरण, संस्कृति के आत्मसात, आबादी का स्थानांतरण, नस्लीय भेदभाव, आर्थिक और शैक्षिक नजरअंदाज और वहां हो रहे सांस्कृतिक दमन

समेत उन्हें तिब्बत की गंभीर स्थिति से अवगत कराया। उन्होंने भारतीय सांसदों से तिब्बत में होने वाली गैरकानूनी चीजों पर चिंता व्यक्त करने में अग्रणी भूमिका निभाने का आग्रह किया और विश्व के नेताओं से वैश्विक जलवायु के लिए तिब्बती पठार में जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) से पारिस्थितिकीय असंतुलन के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान शुरू कराने का आग्रह किया।

अपने तिब्बत वकालत अभियान के अंतिम चार दिनों में डिप्टी स्पीकर के नेतृत्व में तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने ताइवान दूतावास का दौरा किया, जहां उन्होंने राजदूत बौशुआन, उप प्रतिनिधि मुमिन चेन, उप प्रतिनिधि रॉबर्ट, उप प्रतिनिधि एचएसआईईएच बोर-हुई, शिक्षा प्रभाग में सहायक प्रतिनिधि निदेशक पीटर्स एल.वाई.चेन और आप्रवास अधिकारी स्टीवन लियू से मुलाकात की। इस दौरान उनहोंने तिब्बत और ताइवान के लोगों के बीच पारस्परिकता पर चर्चा करते हुए उन्होंने छात्र विनिमय कार्यक्रमों, मंदारिन भाषा अध्ययन छात्रवृत्तिऔर साझा हित के विभिन्न अन्य मुद्दों पर बातचीत की। इसी तरह, तिब्बती प्रतिनिधियों ने दिल्ली में संयुक्त राज्य अमेरिका के दूतावास सहित भारत में अन्य देशों के दूतावासों का भी दौरा किया।

तिब्बती सांसदों को ०९ अप्रैल, २०२२ को अपने आधिकारिक वकालत अभियान का समापन करने से पहले भाजपा के लोकसभा सांसद श्री तपीर गाओ, भाजपा के उपाध्यक्ष और लोकसभा और राज्यसभा दोनों के पूर्व सांसद श्री बैजयंत जय पांडा भाजपा के लोकसभा सांसदश्री जामयांग नामग्याल त्सेरिंग, राजद के राज्यसभा सांसद श्री अमरेंद्र धारी सिंह और पूर्व मंत्री एवं कांग्रेस के पूर्व सांसद श्री जयराम रमेश से मिलने का भी अवसर मिला।

सात दिवसीय तिब्बत वकालत अभियान को हिंदुस्तान टाइम्स,डब्ल्यूआईओएन, ज़ी टीवी, ईटीवी, लाइव सिटीज, वॉयस ऑफ अमेरिका, वॉयस ऑफ तिब्बत और रेडियो फ्री एशिया सहित प्रमुख राष्ट्रीय और स्थानीय मीडिया संस्थानों द्वारा कवर किया गया था।

• ब्रिठेन के मिल्टन कीन्स में नौवीं बार तिब्बत का राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया

tibet.net, २६ अप्रैल, २०२२

लंदन। तिब्बत राष्ट्रीय ध्वजारोहण कार्यक्रम का औपचारिक समारोह रविवार, २४ अप्रैल २०२२ को लंदन से ५० मील उत्तर-पश्चिम में स्थित मिल्टन कीन्स में निप्पोनजन मायोहोजी बौद्ध मंदिर में आयोजित किया गया था। यह लगातार नौवां वर्ष है जब एक स्थानीय निवासी सुश्री कैथरीन मोस्टिन स्कॉट और उनकी समर्पित स्वयंसेवकों की टीम द्वारा तिब्बत का राष्ट्रीय ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

इंग्लैंड के मिल्टन शहर के मेयर मोहम्मद खान ने तिब्बत का राष्ट्रीय ध्वज फहराया

सुश्री कैथरीन मोस्टिन स्कॉट नेमिल्टन कीन्स के पहले सिटिजन काउंसलर और मेयर मोहम्मद खान की उपस्थिति में तिब्बत का झंडा फहराया। मंदिर में आयोजित इस कार्यक्रम में ८० से अधिक लोग उपस्थित हुए। सुश्री कैथरीन ने वार्षिक ध्वजारोहण कार्यक्रम के महत्व को संक्षेप में समझाया। उन्होंने फ्रीडम हाउस की २०२२ की रिपोर्ट का हवाला देते हुए बताया कि किस तरह तिब्बत को सीरिया और दुनिया के अन्य देशों की तुलना में भी सबसे कम आजाद देश माना गया है। इस साल तिब्बत को आजादी के मामले में सूची में सबसे नीचे स्थान दिया गया है।

इस कार्यक्रम में प्रतिनिधि सोनम त्सेरिंग फ्रासी, मिल्टन कीन्स के मेयर और उनकी पत्नी,तिब्बत कार्यालय के कर्मचारी तेनज़िन ज़ेधन,मंदिर की भिक्षुणी सिस्टर मारुता, फ्री तिब्बत की ओर से तेनज़िन कुंगा और नामग्याल तारब, कैथरीन के परिवार के लोग और मिल्टन कीन्स के स्थानीय निवासियों ने भाग लिया।

समारोह को संबोधित करते हुए तिब्बत की प्रतिनिधि फ्रासी ने मेयर और मेयरेस, कैथरीन के परिवार, सिस्टर मारुता और अन्य उपस्थित लोगों को उनकी उपस्थिति और एकजुटता के लिए धन्यवाद दिया और उनसे इसे आगे भी जारी रखने का आग्रह किया।

तिब्बत और यूक्रेन के बीच समानता बताते हुए उन्होंने कहा कि इस साल यूक्रेन के साथ जो हुआ वही घटना १९५० में तिब्बत के साथ हुई थी। उन्होंने कहा कि दोनों का संकट काफी हद तक समान रहा है।

प्रतिनिधि ने कहा कि इस ध्वजारोहण कार्यक्रम का आयोजन तिब्बत के अंदर तिब्बतियों के लिए और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक तिब्बती के रूप में पहचान को जारी रखने के लिए एक बहुत बड़ी प्रेरणा है। क्योंकि हम मानते हैं कि अंत में सत्य की जीत होनी चाहिए। तिब्बतियों की राष्ट्रीय पहचान का प्रतीक इस ध्वज को फहराने का कार्यक्रम आगे भी जारी रहेगा।

मिल्टन कीन्स के मेयर ने कहा कि इस कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर मिलना उनके लिए बहुत ही सम्मान की बात है। इस बीच उन्होंने एक बांग्लादेशी के रूप में अपनी व्यक्तिगत व्यथा कथा और स्वतंत्रता के लिए अपने लोगों द्वारा किए गए संघर्षों की कहानी सुनाई।

उन्होंने कहा, 'आजादी के लिए लड़ना और अपने झंडे को ऊंचा रखना दुनिया की सबसे अच्छी चीजों में से एक हो सकता है।'उन्होंने और आगे कहा, 'दुनिया में कई जगहों पर कब्जे हो रहे हैं और मिल्टन कीन्स का फर्स्ट सिटिजन होने के नाते कहना चाहूंगा कि यहां ७५तरह की अलग-अलग भाषाएं बोली जाती हैं और यहां के लोग आपस में सौहार्द और सदभावना के साथ मिल-जुलकर रहते हैं। मैं सभी कब् वाले देशों को यह बताना चाहता हूं कि सभी के लिए स्वतंत्रता महत्वपूर्ण है।'

उन्होंने कहा मिल्टन कीन्स के मेयर होने के नाते यहां एक शांतिपूर्ण स्थान में शांतिपूर्ण प्रदर्शन में शामिल होकर उन्हें गहरे सम्मान की अनुभूति हो रही है और उन्होंने इस आयोजन को निरंतर समर्थन जारी रखने का आश्वासन दिया।

कार्यक्रम के दौरान,फ्री तिब्बत के तेनजिन कुंगा ने तिब्बत की वर्तमान स्थिति पर सभा को संबोधित किया और ११वें पंचेन लामा की ३३वीं जयंती और उनके जबरन गायब होने के बारे में भी बताया।

सिस्टर मारुता ने अपने संबोधन में कहा, 'सभ्यता बिजली की रोशनी या हवाई जहाज या परमाणु बम रखने से नहीं बनती है, सभ्यता लोगों को मारना नहीं है, चीजों को नष्ट करना नहीं है और युद्ध करना नहीं है। सभ्यता परस्पर स्नेह और एक- दूसरे का सम्मान करना है। आज हम तिब्बत की सभ्यता, तिब्बत की आत्मा और तिब्बत की पहचान का सम्मान करने के लिए एक साथ खड़े हुए हैं।'

तिब्बत कार्यालय,लंदन ने ११वें पंचेन लामा के बारे में जागरुकता फैलाने के लिए मेयर और कैथरीन को धन्यवाद दिया और११वें पंचेन लामा पर लिखी 'तिब्बत्स स्टोलेन चाइल्ड' नामकी एक पुस्तक भेंट की।

• स्पीकर ने राज्यसभा सांसद मुजीबुल्ला खान और श्री के.ठी.एस. तुलसी से मुलाकात की

tibet.net, २६ अप्रैल, २०२२

धर्मशाला। निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल ने ओडिशा से बीजू जनता दल के राज्यसभा सांसद श्री मुजीबुल्ला खान और छत्तीसगढ़ से कांग्रेस के राज्यसभा सांसद श्री. के.टी.एस. तुलसी से मुलाकात की। ये दोनों भारतीय सांसद २५ अप्रैल २०२२ को तिब्बती संसद के दौरे पर आए थे।

तिब्बती संसद के बारे में जानकारी देते हुएभारतीय सांसदों को इसकी संरचना और कामकाज से परिचित कराया गया। भारतीय सांसदों को टीपीईई के द्विवार्षिक सत्र और स्थायी समिति के बारे में भी जानकारी दी गई।

इसी तरह स्पीकर ने भारतीय सांसदों को तिब्बत के अंदर की वर्तमान गंभीर स्थिति से अवगत कराया, जहां रह रहे तिब्बती बुनियादी मानवाधिकारों से वंचित हैं। साथ ही सभी तिब्बतियों की ओर से स्पीकर ने पिछले छह दशकों से तिब्बतियों को सुविधा और समर्थन के लिए भारत की सरकार और लोगों का आभार व्यक्त किया।

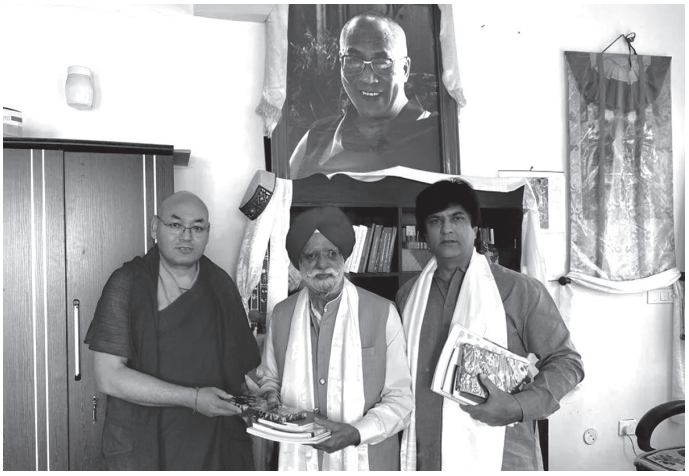

17वीं निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर के साथ राज्यसभा सांसद श्री मुजीबुल्ला खान और श्री के.टी.एस. तुलसी

अमेरिकी विदेश विभाग ने चीन से तिब्बत के ११वें पंचेन लामा को 'तत्काल रिहा' करने का आग्रह किया

tibet.net, २६ अप्रैल, २०२२

धर्मशाला। तिब्बत के ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा की ३३वीं जयंती के अवसर पर अमेरिकी विदेश विभाग ने सोमवार, ०२ अप्रैल को एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर चीन से लापता पंचेन लामा के ठिकाने और कुशल-क्षेम की जानकारी देने की मांग की। न्यिमा को आखिरी बार १७ मई १९९५ को छह साल की उम्र में सार्वजनिक तौर पर देखा गया था।

एक ओर जहां तिब्बती और तिब्बत के मित्र उनके ३३वें जन्मदिन को मना रहे हैं, वहीं दूसरी ओर चीनी सरकार उनके गायब होने के पीछे की सच्चाई को छुपाना जारी रखे हुए है। चीन ११वें पंचेन लामा और उनके परिवार के ठिकाने से संबंधित किसी भी प्रकार की जानकारी भी देने से इनकार करती रही है।

विदेश विभाग के प्रवक्ता नेड प्राइस ने कहा, 'आज ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा का ३३वां जन्मदिन है।वह १७ मई,१९९५ को मात्र छह साल की उम्र में पीआरसी अधिकारियों द्वारा अपहरण किए जाने के बाद से लापता हैं। पीआरसी उन्हें तिब्बती समुदाय के सदस्यों की पहुंच से दूर रख रहा है। दलाई लामा द्वारा चयनित पंचेन लामातिब्बती बौद्ध धर्म में दूसरे सबसे सम्मानित व्यक्ति हैं। चीन इसके बजाय एक सरकार द्वारा थोपे हुए पंचेन लामा को बढ़ावा देना जारी रखे हुए है।'

पंचेन लामा के जबरन गायब करने के लिए चीन को जिम्मेदार ठहराते हुए विदेश विभाग के प्रवक्ता ने चीन को जोर देकर कहा कि वह गेधुन चोएक्यी न्यिमा को पीआरसी की अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं के अनुसार मानवाधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता का पूरी तरह से प्रयोग करने का पूरा अधिकार प्रदान करे।

अमेरिकी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता नेड प्राइस

बयान के अंत में कहा गया है कि संयुक्त राज्य अमेरिका तिब्बतियों की धार्मिक स्वतंत्रता और उनकी अनूठी धार्मिक,सांस्कृतिक और भाषाई पहचान का समर्थन करता है।इसमें तिब्बतियों को दलाई लामा और पंचेन लामा जैसे अपने स्वयं के धार्मिक नेताओं को सरकारी हस्तक्षेप के बिना अपनी मान्यताओं के अनुसार चुनने,शिक्षित करने और उनकी पूजा करने का अधिकार शामिल है।

• अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के कशाग सचिवालय का दौरा किया

tibet.net, २१ अप्रैल, २०२२

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के कार्यालय में दौरे पर आए अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल के सदस्य

धर्मशाला। संयुक्त राज्य अमेरिका का एक प्रतिनिधिमंडल केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के संक्षिप्त दौरे पर आज २१ अप्रैल, २०२२ को धर्मशाला पहुंचा। इस प्रतिनिधिमंडल में अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार मिचेल कुइकेन, सीनेट के बहुमत दल के नेता सीनेटर चार्ल्स ई. शूमर, सीनेट की विदेश संबंध समिति के वरिष्ठ सलाहकार और परामर्शदाता माइकल शिफ़र, अमेरिकी दूतावास के मंत्री परामर्शदाता श्री ग्राहम मेयर और अमेरिकी दूतावास, नई दिल्ली में अमेरिकी विदेश सेवा अधिकारी एंड्रयू ओयू शामिल हैं।

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन पहुंचने के बादप्रतिनिधिमंडल ने कशाग सचिवालय में सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग से मुलाकात की। बैठक के दौरान शिक्षा कलोन थर्लम डोल्मा, सुरक्षा कलोन ग्यारी डोल्मा, डीआईआईआर कलोन नोरज़िन डोल्मा, कशाग सचिव त्सेग्याल चुक्या ड्रैनी और डीआईआईआर सचिव कर्मा चोयिंग भी सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग के साथ थे।

• भारत के सर्वदलीय सांसद प्रतिनिधियों ने तिब्बती संघर्ष के साथ एकजुटता जताने के लिए धर्मशाला का दौरा किया

tibet.net , २७ अप्रैल, २०२२

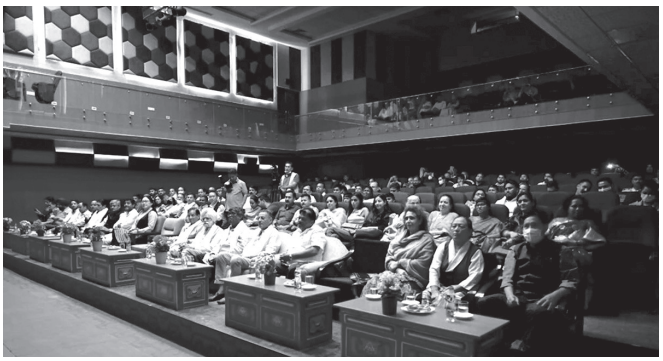

निर्वासित तिब्बती संसद में भारत के विभिन्न राजनीतिक दलों के सांसदों का प्रतिनिधिमंडल

धर्मशाला। भारत में विभिन्न राजनीतिक दलों के सांसदों के एक प्रतिनिधिमंडल ने मंगलवार, २६ अप्रैल को धर्मशाला का दौरा किया और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और तिब्बती संघर्ष के साथ अपने समर्थन और एकजुटता की घोषणा की।

टीआईपीए में शिष्टमंडल का गर्मजोशी से स्वागत करने के लिए सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया था, जिसमें कलोन नोरज़िन डोल्मा, कशाग सचिव त्सेग्याल चुक्या द्रानी, डीआईआईआर सचिव कर्मा चोयिंग और गृह सचिव त्सेवांग डोल्मा शोसुर के साथ कार्यवाहक सिक्योंग कलोन ग्यारी डोल्मा शामिल हुए।

कालोन ग्यारी डोल्मा ने अपने संबोधन में ६० से अधिक वर्षों के निर्वासन में तिब्बतियों की मेजबानी करने और उनका समर्थन करने के लिए भारत सरकार और भारत के नागरिकों के प्रति आभार प्रकट किया। उन्होंने तिब्बत में चीनी दमन की मौजूदा स्थितिके मद्देनजर कहा कि तिब्बती विरासत और सांस्कृतिक पहचान को भारत में ही पूरी स्वतंत्रता के साथ संरक्षित किया जा सकता है।

कलोन ने भविष्य में इसी तरह की ओर यात्रा के लिए निमंत्रण देते हुए कहा, 'हम भारत सरकार और भारत के लोगों को हमारे घर से दूर निर्वासन में घर देने के लिए धन्यवाद देना चाहते हैं।'

शाम का समापन टीपा के कलाकारों द्वारा जीवंत सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ हुआ।

भारतीय संसद के अतिथि प्रतिनिधिमंडल में बिहार से राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह (जनता दल यू), पंजाब से गुरजीत सिंह औजला (कांग्रेस पार्टी), आंध्र प्रदेश से चंद्रशेखर बेल्लाना (कांग्रेस पार्टी),यूपी से हरीश द्विवेदी (भारतीय जनता पार्टी), तमिलनाडु से एस. ज्ञानथिरवियम (द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम), महाराष्ट्र से संजय हरिबाबू जाधव (शिवसेना), यूपी से जय प्रकाश (भारतीय जनता पार्टी), हिमाचल प्रदेश से किशन कपूर (भारतीय जनता पार्टी),पश्चिम बंगाल से सुनील कुमार मंडल (भारतीय जनता पार्टी), गुजरात से दीपसिंह शंकरसिंह राठौड़ (भारतीय जनता पार्टी), असम से अजीत कुमार भुइयां (निर्दलीय), राजस्थान से राजेंद्र गहलोत (भारतीय जनता पार्टी),ओडिशा से मुजीबुल्ला खान (बीजू जनता दल), यूपी से संजय सेठ (समाजवादी पार्टी) और छत्तीसगढ़ से के.टी.एस. तुलसी (कांग्रेस पार्टी) शामिल हुए।

त्रिपुरा के मंत्री राम प्रसाद पॉल ने तिब्बती संसद का दौरा किया

tibet.net, ११ अप्रैल,२०२२

निर्वासित तिब्बती संसद में त्रिपुरा के मंत्री श्री राम प्रसाद पॉल

धर्मशाला। त्रिपुरा के मंत्री श्री राम प्रसाद पॉल ने आज ११ अप्रैल की सुबह लगभग १०:०० बजे निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया। इस दौरान स्थायी समिति के सदस्यों द्वारा उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया। इस यात्रा का समन्वय श्री ऋषि वालिया द्वारा किया गया था जो कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया के उत्तर भारत के क्षेत्रीय संयोजक हैं।

स्थायी समिति के सदस्यों ने माननीय राज्य मंत्री को तिब्बती संसद भवन का दौरा कराया और निर्वासित तिब्बती संसद के कामकाज पर प्रकाश डाला। बाद में उन्हें स्थायी समिति के सदस्यों द्वारा सम्मेलन हॉल में ले जाया गया, जहां उनको निर्वासित तिब्बती संसद और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की समग्र संरचना के बारे में गहन परिचय दिया गया। उन्होंने सदस्यों से चीन-तिब्बत संघर्षों के बीच बातचीत की वर्तमान स्थिति के बारे में पूछा, जिसमें सदस्यों ने इस तरह की बातचीत की जल्द बहाली पर सीटीए की इच्छाओं के बारे में बताया। यह संवाद परम पावन दलाई लामा और सीटीए के मध्यम मार्ग दृष्टिकोण की नीति है, जिसमें चीनी सरकार को चीन के जनवादी गणराज्य के ढांचे के भीतर तिब्बत के तीन पारंपरिक प्रांतों में रहने वाले सभी तिब्बतियों के लिए वास्तविक स्वायत्तता देने के लिए तैयार होने का प्रस्ताव है। चीनी सरकार द्वारा बार-बार अस्वीकार किए जाने के कारण नौवें दौर की वार्ता के बाद वर्ष २०१० से चीन-तिब्बत संवाद रुका हुआ है।

बाद में उन्हें परम पावन १४वें दलाई लामा पुस्तक 'माई लैंड एंड माई पीपुल' की प्रति तिब्बतियों और भारतीयों के बीच संबंधों को गहरा करने के लिए स्मारिका के तौर पर प्रस्तुत किया गया।

जिनेवा शिखर सम्मेलन में तिब्बत और अन्य क्षेत्रों में चीन द्वारा उत्पीड़न पर चर्चा

tibet.net, ०६ अप्रैल,२०२२

स्विट्ज़रलैंड। राजनीतिक विद्रोही, वर्तमान राजनीतिक कैदियों के प्रतिनिधि और स्वतंत्रता कार्यकर्ता कूटनीति और मानवाधिकारों के वैश्विक केंद्र जिनेवा में 'जिनेवा समिट फॉर ह्यूमन राइट्स एंड डेमोक्रेसी' के १४वें सत्र में एकत्रित

हुए। शिखर सम्मेलन में विश्व स्तर पर उन देशों के मुद्दों पर प्रकाश डाला गया,जिनके मानवाधिकारों के रिकॉर्ड खराब हैं। ताकि उनकी स्वतंत्रता और मानवाधिकारों की रक्षा के लिए और अधिक करने के लिए उन्हें अंतरराष्ट्रीय एजेंडे में रखा जा सके। शिखर सम्मेलन में अन्य एकाधिकारवादी शासनों के बीच चीन और उसके उत्पीड़न के तहत क्षेत्रों के अधिकारों के रिकॉर्ड पर विचार-विमर्श किया गया।

स्विट्ज़रलैंड के दौरे पर स्वतंत्रता कार्यकर्ता और कवि तेंजिन त्सुंडु

'चीन में मानवाधिकारों के लिए संघर्ष' शीर्षक से चीन पर केंद्रित शिखर सम्मेलन के एक खंड में तिब्बती कवि और स्वतंत्रता कार्यकर्ता तेनज़िन त्सुंडु, 'उग्यूरों के लिए अभियान के संस्थापक' और चीन में एक राजनीतिक कैदी की बहन रुशान अब्बास और हांगकांग वॉच में नीति सलाहकार तथा चीन पर अंतर-संसदीय गठबंधन के सलाहकार जॉय सिउ को विचार रखने के लिए आमंत्रित किया गया।

इस पैनल का संचालन गुलामी विरोधी चैरिटी-'एराइज' के संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी ल्यूक डी पुलफोर्ड द्वारा किया गया।

आज सुबह शिखर सम्मेलन में बोलते हुए तेनज़िन त्सुंडू ने तिब्बत में अपनी यात्रा और जेल के अनुभवों का विवरण प्रस्तुत करके दर्शकों को आकर्षित किया। उन्होंने बताया कि चीनी जेलों में 'व्यक्ति को तोड़ने' के लिए आंखों पर पट्टी बांधकर पीटा जाता है, उन्हें प्रताड़ित किया जाता है, भोजन और नींद से वंचित किया जाता है। उन्होंने इन प्रताड़नाओं को झेलने पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इसके लिए तिब्बती बौद्ध और सांस्कृतिक परवरिश ने उन्हें आंतरिक तौर पर सहन शक्ति दी थी और कहा कि 'असली ताकत वह नहीं है जो बाहर से अत्याचार कर रहा है', बल्कि वास्तविक शक्ति वह है जो जीवन के उच्च उद्देश्यों के लिए खुद को सशक्त बनाता है। त्सुंडू ने कहा कि असली शक्ति शक्ति घृणा, क्रोध और बदला लेने की इच्छा से नहीं आती है।त्सुंडू ने अपील की कि वास्तव मेंअसल शक्ति दुश्मन के साथ सहानुभूति रखने में है जो कमजोरी के दौर से गुजर रहा है। त्सुंडू ने कहा 'एक और तरीका है, जो नहीं होना चाहिए। वह है 'एक-दूसरे से नफरत करना।'

तिब्बत के ऐतिहासिक तथ्यों पर प्रकाश डालते हुए त्सुंडू ने कहा किद्वितीय विश्व युद्ध के ठीक बाद जबसंयुक्त राष्ट्र की शुरुआत हो रही थी और इतिहासकी उस अवधि में, जब अधिकांश राष्ट्र स्वतंत्र होने लगे थे, उसी दौर में चीन ने तिब्बत पर आक्रमण किया, जिसमें हजारों तिब्बती मारे गए। लेकिन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसे लेकर ज्यादातर लोग जागरूक नहीं थेऔर तिब्बत को जानने वालों ने चीन का पक्ष लिया। आज चीनी राष्ट्र में ९६लाख वर्ग किलोमीटर भूमि तिब्बत, पूर्वी तुर्किस्तान, मंचूरिया और दक्षिणी मंगोलिया को मिलाकर बनाई गई है। आज के चीन के भूभाग का ६० प्रतिशत हिस्सा कब्जे वाले देशों का है।

अपनी ही सरकार द्वारा सताए और दबाए जा रहे चीनी लोगों पर अपनी चिंता व्यक्त करते हुए त्सुंडू ने कहा, 'मुझे तिब्बती लोगों की उतनी चिंता नहीं है, जितनी मुझे उन चीनी लोगों की चिंता है जो अपनी तानाशाही सरकार के अधीन हैं और पीड़ित हैं।'त्सुंडू ने १.४ अरब आबादी वाले चीन का दुनिया में सबसे बड़ा एकाधिकारवादी शासन होने के बावजूद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चीन का समर्थन करने वाली सरकारों और व्यापारिक हितों को हर चीज से ऊपर रखने पर निराशा व्यक्त की। त्सुंडू ने शोक व्यक्त करते हुए कहा, इसका एक दूसरा तरीका होना चाहिए। यह इस तरह नहीं चल सकता। उन्होंने कहा कि तानाशाहों द्वारा तानाशाहों का समर्थन किया जाता है और संयुक्त राष्ट्र में आकर शांति की बात की जाता है। लेकिन वे आंतरिक रुप से अधिक से अधिक लोगों को दबाने के लिए काम करते हैं।' त्सुंडू ने श्रोताओं को बताया कि मानव अधिकार रक्षकों और स्वतंत्रता कार्यकर्ताओं के बीच एकजुटता ही आगे बढ़ने का रास्ता हो सकता है।

जिनेवा शिखर सम्मेलन के सहयोगी गैर सरकारी संगठनों में से एक 'स्विस-तिब्बती महिला संगठन' ने तिब्बती कार्यकर्ता तेनज़िन त्सुंडू का शिखर सम्मेलन में बोलने के लिए विशेष रुप से अभिनंदन किया। इसके बाद यूरोप के अन्य हिस्सों में तिब्बत एडवोकेसी के लिए त्सुंडू का दौरा निर्धारित है।

• भारत-चीन तनाव को हल करने की कुंजी तिब्बत मुद्दे के समाधान में है : डिप्टी स्पीकर डोल्मा त्सेरिंग तेखांग

tibet.net, १७ अप्रैल,२०२२

लखनऊ में भारत-तिब्बत सहयोग मंच के सेमिनार में 17वीं निर्वासित तिब्बती संसद की डिप्टी स्पीकर डोल्मा छेरिंग तेखांग

लखनऊ।१७वीं निर्वासित तिब्बती संसद की उपाध्यक्ष श्रीमती डोल्मा त्सेरिंग तेखांग ने १६ अप्रैल २०२२ को उत्तर प्रदेश के लखनऊ में 'तिब्बत-कैलाश मुक्ति जन सम्मेलन' मुद्दे पर भारत तिब्बत सहयोग सम्मेलन में विशेष अतिथि के रुप में भाग लिया।

भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) भारत में कई तिब्बत समर्थक समूहों में से एक है, जिसकी स्थापना श्री इंद्रेश कुमार जी और डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री के संरक्षण में परम पावन १४वें दलाई लामा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के पूर्व सरसंघचालक स्वर्गीय श्री सुदर्शन जी के आशीर्वाद से ०५ मई १९९९ को की गई थी। सम्मेलन में भारत के २९ राज्यों से के २००० से अधिक सदस्यों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह सुबह १०:३० बजे बीटीएसएम के राष्ट्रीय महासचिव श्री पंकज गोयल के स्वागत भाषण के साथ शुरु हुआ। इसके बाद बीटीएसएम के संस्थापक मुख्य अतिथि श्री इंद्रेश कुमार,विशेष अतिथि डिप्टी स्पीकर श्रीमती डोल्मा त्सेरिंग तेखांग द्वारा दीप प्रज्ज्वलन किया गया। मंच पर अन्य अतिथियों के साथ कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया के राष्ट्रीय संयोजक श्री आर.के. खिरमे और बीटीएसएम महिला विंग की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती रेखा गुप्ता मौजूद थीं।

स्वागत भाषण में श्री पंकज ने उल्लेख किया कि बीटीएसएम का मुख्य उद्देश्य तिब्बत के मुद्दे और भारतीय सीमा में चीनी सेना द्वारा घुसपैठ के बारे में बड़े पैमाने पर भारतीय जनता में जागरुकता पैदा करने के साथ ही तिब्बत और कैलाश-मानसरोवर को मुक्त कराना है।

डिप्टी स्पीकर ने १९५४ में राज्यसभा में भारतीय संविधान के पिता डॉ. भीमराव

आंबेडकर के शब्दों को याद करते हुए अपने संबोधन की शुरुआत की। '१९४९ में चीन को मान्यता देने के बजाय अगर भारत ने तिब्बत को यह मान्यता दी होती तो कोई चीन-भारतीय सीमा संघर्ष नहीं होता। यह इतिहास का एक सत्य है और दूसरा सत्य यह है कि तिब्बत कभी चीन का हिस्सा नहीं था। भारत और चीन के बीच तब तक कोई सीमा नहीं थी, जब तक कि पीआरसी ने तिब्बत पर अवैध रूप से आक्रमण कर कब्जा नहीं किया। उन्होंने कहा, 'जब तक तिब्बत का मुद्दा सुलझ नहीं जाता, भारत और चीन के बीच सीमा विवाद अनसुलझा रहेगा।' कैलाश-मानसरोवर की मुक्ति तिब्बत मुद्दे के हल होने के बाद ही संभव है। इसके लिए परम पावन दलाई लामा के दूतों और चीनी सरकार के बीच बातचीत की शीघ्र बहाली अति महत्वपूर्ण है। उन्होंने तिब्बत के भीतर महत्वपूर्ण मानवाधिकारों की स्थिति, राजनीतिक दमन, धार्मिक और सांस्कृतिक आत्मसात, जनसंख्या स्थानांतरण और नस्लीय भेदभाव पर विस्तार से बात की। उन्होंने चीनी नेतृत्व को यह जवाब देने के लिए भी चुनौती दी कि अगर तिब्बती भाई-बहन समाजवाद की धूप का आनंद ले रहे हैं तो वे खुद को क्यों जला रहे हैं।

उन्होंने बीटीएसएम द्वारा संचालित कार्यक्रमों और अभियानों की सराहना की और साथ ही बीटीएसएम से तिब्बती लोगों के साथ मिलकर काम करने का आग्रह किया ताकि तिब्बत और जमीनी स्तर पर भारतीयों के बीच इसकी भयावह स्थिति के बारे में अधिक जागरूकता बढ़ाई जा सके। अंत में उन्होंने इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए बीटीएसएम का आभार व्यक्त किया। तिब्बत पर सम्मेलन- कैलाश मानसरोवर मुक्ति जन सम्मेलन- का समापन मुख्य अतिथि के भाषण के साथ हुआ। इसके बाद सभी मेहमानों को पारंपरिक भारतीय गमछा और गुलदस्ता देकर सम्मानित किया गया।

तिब्बत-कैलाश मुक्ति जन सम्मेलन के बाद इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान सभागार में मुख्य अतिथि श्री इंद्रेश कुमार और विशेष अतिथि डिप्टी स्पीकर श्रीमती डोल्मा त्सेरिंग तेखांग प्रतिभागियों के साथ उस स्थान पर एकत्र हुए, जहां भारतीय राष्ट्रीय ध्वज और बीटीएसएम ध्वज के साथ तिब्बती राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया था। इसके बाद भारतीय राष्ट्रगान गाया गया।

• भारत-तिब्बत सहयोग मंच ने तिब्बत के ११वें पंचेन लामा की ३३वीं जयंती के उपलक्ष्य में अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया

tibet.net, २५ अप्रैल, २०२२

भारत-तिब्बत सहयोग मंच द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय वेबिनार में ऑनलाइन उपस्थित प्रतिभागी

दिल्ली। भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) द्वारा तिब्बत के ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा की ३३वीं जयंती रविवार, २४ अप्रैल २०२२ के अवसर पर एक अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। पिछले २३ वर्षों से भारत-तिब्बत सहयोग मंच राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राष्ट्रीय कार्यकारी सदस्य और वरिष्ठ प्रचारक माननीय इंद्रेश कुमारके मार्गदर्शन और बीटीएसएम के राष्ट्रीय महासचिव श्री पंकज गोयल के नेतृत्व में तिब्बत और कैलाश मानसरोवर की मुक्ति के लिए दृढ़ संकल्प के साथ काम कर रहा है।

वेबिनार कार्यक्रम की मेजबानी बीटीएसएम के राष्ट्रीय कार्यकारी सदस्य डॉ. सचिन श्रीवास्तव और तिब्बत जन जागरूकता अभियान के सह-संयोजक डॉ. रवि गोंड ने की। कार्यक्रम की शुरुआत तिब्बती बौद्ध प्रार्थना के पाठ के साथ हुई और उसके बाद भारत-तिब्बत सहयोग मंच के आदर्श वाक्य की प्रस्तुति दी गई। वेबिनार की अध्यक्षता स्वामी डॉ. दिव्यानंद महाराज और बीटीएसएम राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती मुन्नी झा ने की।बीटीएसएम के महिला विभाग के राष्ट्रीय महासचिवने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया।

वेबिनार के दौरान श्री पंकज गोयल एक विशिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि '१०वें पंचेन लामा की मृत्यु के बाद परम पावन १४वें दलाई लामा ने १४ मई १९९५ को गेधुन चोएक्यी न्यिमा (जन्म २५ अप्रैल १९८९) को ११वें पंचेन लामा के पुनर्जन्म के रूप में मान्यता दी। ठीक तीन दिन बाद १७ मई १९९५ को ११वें पंचेन लामा और उनका परिवार लापता हो गया और चीनी सरकार ने उनकी जगह एक और लड़के को पंचेन लामा के रूप में थोप दिया जो दुर्भाग्यपूर्ण है। ११वें पंचेन लामा दुनिया के सबसे कम उम्र के राजनीतिक कैदी हैं। परम पावन दलाई लामा द्वारा उनके ३३वें जन्मदिन पर मान्यता प्राप्त ११वें पंचेन लामा को मेरी शुभकामनाएं। आप कहीं भी हों, स्वस्थ रहें और दीर्घायु हों यही मेरी सर्वोत्तम कामना है। मैं भगवान शंकर से प्रार्थना करता हूं कि पंचेन लामा को चीन की हिरासत से जल्द से जल्द रिहा किया जाए।'

दूसरे विशिष्ट वक्ता के रूप में इतिहासकार एवं तिब्बत विशेषज्ञ डॉ. अरुण कुमार श्रीवास्तव उपस्थित थे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि 'असली ११वें पंचेन लामा की अनुपस्थिति में चीन के नकली पंचेन लामा का माओवादी होना निश्चित है। इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं है कि चीन अगले दलाई लामा की चयन प्रक्रिया पर प्रतिकूल प्रभाव डालने का हरसंभव प्रयास करेगा। वे अपने नकली पंचेन लामा का उपयोग कर निर्वासित तिब्बतियों के दावों को समाप्त करने के लिए हरसंभव प्रयास करेंगे।'

वेबिनार के मुख्य अतिथि वक्ता के रूप में तिब्बती युवा कांग्रेस के अध्यक्ष गोंपो धुंडुप ने अपने संबोधन में कहा कि '२५ अप्रैल का यह दिन खुशी के साथ-साथ दुख का भी दिन है, क्योंकि हमारे ११वें पंचेन लामा अभी भी चीनी हिरासत में हैं। यह खुशी की बात है कि भारत तिब्बत की आजादी और ११वें पंचेन लामा की तत्काल रिहाई के लिए जोर-शोर से आवाज उठा रहा है। साथ ही भारत-तिब्बत सहयोग मंच जैसा विश्वस्तरीय संगठन तिब्बत के लिए दिन-रात प्रयासरत है। मैं अपने सभी तिब्बती लोगों की ओर से माननीय इंद्रेश कुमार और श्री पंकज गोयल के प्रति हृदय से धन्यवाद व्यक्त करता हूं।'

वेबिनार के अध्यक्ष, स्वामी दिव्यानंद महाराज ने अपने संबोधन में कहा कि 'तिब्बत की स्वतंत्रता और कैलाश मानसरोवर की मुक्ति के लिए हमें न केवल भारत स्तर से बल्कि दुनिया भर में एक स्वर में चीन की विस्तारवादी नीतियों का कड़ा विरोध करने की आवश्यकता है।

बीटीएसएम के राष्ट्रीय सचिव श्री विजय शर्मा ने सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि हम अपने लक्ष्य में तभी सफल हो सकते हैं जब हम चीनी सामानों के उपयोग का बहिष्कार करें और स्वदेशी को अपनाएं। उन्होंने कहा कि चीन ने अपनी 'छुपाओ और काटो'की नीति से पूरी दुनिया को परेशान कर रखा है।' इस वेबिनार का उद्देश्य ११वें पंचेन लामा की चीनी हिरासत से तत्काल रिहाई के लिए दुनिया भर में तेज आवाज को मजबूत करना और उनके अच्छे स्वास्थ्य और लंबे जीवन की कामना करना था।

• भारत-तिब्बत समन्वय संघ (बीटीएसएस) ने दिल्ली में बैठक और शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शन किया

tibet.net, १५ अप्रैल, २०२२

नई दिल्ली स्थित हरियाणा सदन में आईटीसीओ के कार्यकारी समन्वयक तेनजिंग जॉर्डन को सोविनियर भेंट करते भारत-तिब्बत समन्वय संघ के संरक्षक पूर्व राज्यपाल कप्तान सिंह सोलंकी

नई दिल्ली। भारत में तिब्बत समर्थक समूहों में से एक 'भारत-तिब्बत समन्वय संघ (बीटीएसएस)'ने हरियाणा स्टेट गेस्ट हाउस, नई दिल्ली में दिल्ली, हरियाणा, उत्तराखंड, ब्रज, मेरठ और जयपुर प्रांतों के अपने अध्यक्षों और महासचिवों की बैठक आयोजित की। १५ अप्रैल २०२२ को हुई बैठक की अध्यक्षता बीटीएसएस के मुख्य संरक्षक प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी (हरियाणा के पूर्व राज्यपाल) ने की। प्रो. सोलंकी के साथ बीटीएसएस के राष्ट्रीय संयोजक श्री हेमेंद्र सिंह तोमर, राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. प्रयाग दत्त जुयाल, राष्ट्रीय महासचिव डॉ. अरविन्द केसरी और श्री विजय मान और बीटीएसएस के अन्य राष्ट्रीय और क्षेत्रीय पदाधिकारी शामिल हुए।

भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) के कार्यवाहक समन्वयक श्री तेनजिन जोर्डन ने भी बैठक में भाग लिया, जहां उन्होंने सदस्यों को आईटीसीओ और भारत में विभिन्न तिब्बत समर्थक समूहों के साथ समन्वय करने में इसकी भूमिका के बारे में जानकारी दी और इसके लिए सक्रिय रूप से लगने के लिए काम किया। उन्होंने बीटीएसएस के प्रमुख पदाधिकारियों को खटक (तिब्बती सफेद दुपट्टा) और तिब्बत पर साहित्य भेंट कर उनका अभिनंदन किया। बदले में श्री तेनज़िन जोर्डन और कार्यक्रम अधिकारी छिनी त्सेरिंग को भी स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

बाद में सभी सदस्यों ने बीटीएसएस दिल्ली प्रांत के अध्यक्ष श्री सोनपाल शर्मा के नेतृत्व में जंतर-मंतर पर शांतिपूर्ण विरोध- प्रदर्शन किया और तिब्बत की स्वतंत्रता और कैलाश मानसरोवर को कम्युनिस्ट चीन के अवैध कब्जे से मुक्त कराने का आह्वान किया। उन्होंने 'तिब्बत की आजादी, भारत की सुरक्षा, कैलाश मानसरोवर मुक्त हो,तिब्बत में अत्याचार बंद करो,भारत-तिब्बत मैत्री अमर रहे,जय भारत, जय तिब्बत आदि नारे लगाए।

बाद में बैठक के दौरान प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी ने कहा कि तिब्बत की संस्कृति और सभ्यता को नष्ट करने के लिए चीन द्वारा बनाए जा रहे दुष्चक्र के खिलाफ भारत समेत पूरी दुनिया को एकजुट होना होगा और चीन की विस्तारवादी दमनकारी नीति का विरोध करना होगा। कैलाश की मुक्ति और तिब्बत की आजादी के लिए पूरे देश में एक बड़ा जन आंदोलन खड़ा करना होगा और इस जन आंदोलन के लिए युवा शक्ति को आगे आना होगा।

प्रो. सोलंकी ने आगे उल्लेख किया कि चीन जिस तरह तिब्बत के प्राकृतिक संसाधनों और जल संसाधनों का दोहन कर रहा है, वह आने वाले समय में दुनिया के लिए एक बड़ी चुनौती की तरह विस्फोट करेगा। उन्होंने कहा कि कैलाश की मुक्ति के लिए बीटीएसएस जिस गति से बढ़ा है, वह वास्तव में भगवान शिव की कृपा से है। उन्होंने उपस्थित बीटीएसएस सदस्यों से संगठन को जिला व तहसील स्तर पर भी इकाई बनाने का आह्वान किया।

प्रो. प्रयाग दत्त जुयाल ने कहा कि चीन अपने विस्तारवादी एजेंडे के कारण ही तिब्बत में मानवाधिकारों का उल्लंघन कर रहा है। वे निर्दोष तिब्बतियों को मार रहे हैं। वे चीनी पुरुषों के साथ तिब्बती महिलाओं की जबरन शादी कराके तिब्बती नस्ल को खत्म करने पर आमादा हैं। सदस्यों का आह्वान करते हुए प्रो. जुयाल ने कहा कि तिब्बत का स्वतंत्रता संग्राम न केवल तिब्बत के लिए बल्कि भारत की सुरक्षा के लिए भी आवश्यक है। भारत को बचाने के लिए तिब्बत को आजाद कराना जरूरी है।

श्री हेमेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि डोकलाम से गलवान तक आमने-सामने संघर्ष में खाने के बाद भी चीन अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। चीन को सबक सिखाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि ज्योतिषियों के अनुसार, समय आ गया है कि यदि सभी सकारात्मक प्रयास एक साथ किए जाएं तो तिब्बत स्वतंत्र हो सकता है और कैलाश मुक्त हो जाएगा।

• राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग की सदस्य रिनचेन लामो ने दक्षिण भारत में तिब्बती बस्तियों का दौरा किया

tibet.net, २२ अप्रैल,२०२२

भारत के राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग की सदस्य रिनचेन लामो के साथ कर्नाटक के मुंडगोड स्थित तिब्बती बस्ती के प्रतिनिधि

धर्मशाला। भारत के राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग की सदस्य रिनचेन लामो ने ३० मार्च से १२ अप्रैल तक दक्षिण भारत में तिब्बती बस्तियों का दौरा किया।

बेलगाम हवाई अड्डे पर उनके आगमन पर दक्षिण क्षेत्र के मुख्य प्रतिनिधि अधिकारी (सीआरओ), मुंडगोड सेटलमेंट ऑफिसर (एसओ), हिमालयन इंडियन बौद्ध स्टूडेंट्स वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष और स्थायी समितियों ने डेपुंग लोसेलिंग ध्यान और विज्ञान केंद्र में रिनचेन लामो का गर्मजोशी से स्वागत किया।

अगले दो दिनों में उन्होंने इस क्षेत्र के प्रत्येक बौद्ध मठों का दौरा किया और संबंधित मठों के मठाधीशों और कोषाध्यक्षों के साथ बातचीत की और उनकी बाधाओं पर चर्चा की। इसके अलावा, उन्होंने क्षेत्रीय राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग और जिला मजिस्ट्रेट के प्रतिनिधियों को तिब्बती निवासियों की समस्याओं के तत्काल समाधान की अपील करने के लिए इकट्ठा किया। साथ ही, उन्होंने सभा से पंद्रह दिनों के भीतर एक विनती जारी करने का आग्रह किया।

बस्ती अधिकारियों और तिब्बती समुदाय के प्रमुखों द्वारा अनुरक्षित, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य ने हुनसुर में ग्युदमेद मठ और ज़ोंगकर चोदे मठ का निरीक्षण किया।उसके बाद बाइलाकुप्पे में मठों का निरीक्षण किया। ०६ अप्रैल को रिनचेन ने तिब्बती निवासियों के कल्याण के बारे में लुगसम समदुपलिंग और डेकी

लारसो बस्ती के प्रतिनिधियों के साथ एक चर्चा बुलाई।

०९ अप्रैल को उन्होंने दलाई लामा इंस्टीट्यूट फॉर हायर एजुकेशन एंड तिब्बती मेडिकल एंड एस्ट्रोलॉजिकल इंस्टीट्यूट का दौरा किया,जो बेंगलुरु के रास्ते में था। इसी तरह,उन्होंने बेंगलुरु युवा छात्रावास में तिब्बती छात्रों के साथ बातचीत की,जहां उन्होंने उन्हें अल्पसंख्यकों के लिए भारत सरकार के प्रावधान के बारे में बताया और छात्रों को अपनी पढ़ाई में ईमानदार रहने की सलाह दी।
अपनी आधिकारिक यात्रा के समापन से पहले रिनचेन ने कर्नाटक के मुख्य सचिव श्री पी. रवि कुमार और कर्नाटक में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सचिव श्री मणिवन्नन के अलावा राज्य में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अन्य प्रमुखों के साथ मुलाकात की। इन अधिकारियों से उन्होंने हिमालयी छात्रों और तिब्बती निर्वासितों द्वारा सामना की जा रही कठिनाइयों से अवगत कराया। इस पूरे कार्यक्रम में दक्षिण क्षेत्र के मुख्य प्रतिनिधि कार्यालय के एक प्रतिनिधि ने भी हिस्सा लिया।

• भारत-तिब्बत समर्थक समूहों और बेंगलुरू में मुख्य प्रतिनिधि कार्यालय ने ११वें पंचेन लामा की ३३वीं जयंती मनाई

tibet.net, २६ अप्रैल, २०२२

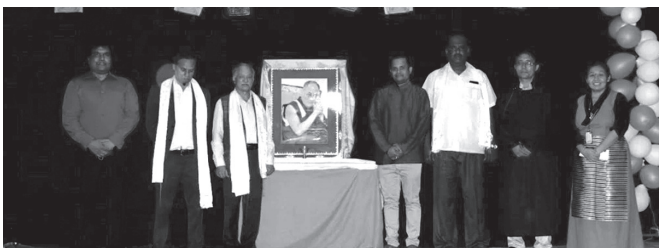

बेंगलुरु में 11वें पंचेन लामा के जन्मदिन समारोह में दक्षिण भारत स्थित तिब्बत समर्थक समूह के प्रतिनिधि

बेंगलुरु। भारत-तिब्बत समर्थक समूहों ने बेंगलुरु में मुख्य प्रतिनिधि कार्यालय, टीवाईएच की छात्र परिषद और क्षेत्रीय तिब्बती युवा कांग्रेस के साथ मिलकर तिब्बत के ११वें पंचेन लामा गेंधुन चोएक्यी न्यिमा की ३३वीं जयंती मनाई। इस अवसर पर आईआरएस अधिकारी और अहिंसा के सह-संस्थापक श्री हर्षवर्धन उमरेको मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। सेवानिवृत्त आईएफएस किशन सिंह सुगरा कोविशिष्ट अतिथि के रूप में तथा कोरिया व्यापार संगठन के पूर्व उप निदेशक श्री. टी.एन. चंद्रशेखर अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित थे।
वक्ताओं ने सर्वसम्मति से तिब्बतियों की राष्ट्रीय पहचान और संस्कृति को बनाए रखने के महत्व के बारे में बात की, जबकि तिब्बतियों से संघर्ष के दौरान सकारात्मक बने रहने का आग्रह करते हुए कहा कि सत्य की जीत होगी।
मुख्य अतिथि ने दलाई लामा और पंचेन लामा के संस्थानों के महत्व और इन दो बहुत महत्वपूर्ण संस्थानों के वंश परंपरा में हेरफेर करने और रणनीतिक रूप से हस्तक्षेप करने की चीनियों की मंशा के बारे में भी बताया।
मुख्य प्रतिनिधि कार्यालय, बेंगलुरु के अवर सचिव तेनज़िन दाज़ी ने ११वें पंचेन लामा के जन्मदिन समारोह का परिचय दिया, जिसमें बताया गया था कि कैसे १९९५ में चीन के जनवादी गणराज्य ने ११वें पंचेन लामा और उनके परिवार का अपहरण किया था।

तीनों मेहमानों को परम पावन १४वें दलाई लामा की चार सिद्धांत प्रतिबद्धताओं 'थंगका'से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर तिब्बती युवा छात्रावास के छात्रों और लद्दाखी छात्रों ने अपने-अपने पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत किए।

• आईटीएफएस हजारीबाग में ११वें पंचेन लामा की ३३वीं जयंती मनाई गई

tibet.net २६ अप्रैल, २०२२

हजारीबाग में 11वें पंचेन लामा के जन्मदिन समारोह में भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस) के सदस्य

हजारीबाग। भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस) हजारीबाग ने २५ अप्रैल को हजारीबाग (झारखंड) के बड़ा बाजार में तिब्बत के ११वें पंचेन लामा का ३३वां जन्मदिन मनाया। जन्मदिन समारोह के दौरानअध्यक्ष श्री सुदेश कुमार चंद्रवंशी के नेतृत्व में आईटीएफएस सदस्यों ने ११वें पंचेन लामा की प्रार्थना की और उन्हें शुभकामनाएं दीं।

श्री सुदेश कुमार ने अपने संबोधन में इस बात पर बल दिया कि परम पावन १४वें दलाई लामा ने २५ अप्रैल १९८९ को जन्में गेधुन चोएक्यी न्यिमा को १४ मई १९९५को १०वें पंचेन लामा के पुनर्जन्म के रूप में मान्यता दी। चीनी सरकार ने १७ मई को ११वें पंचेन लामा का अपहरण कर लिया और उनके पूरे परिवार को लापता कर दिया गया, जबकि चीनी सरकार ने उनके स्थान पर एक और लड़के को थोप दियाजो बहुत दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने आगे कहा कि ११वें पंचेन लामा दुनिया के सबसे कम उम्र के राजनीतिक कैदी हैंऔर चीनी सरकार को उन्हें तुरंत अपनी कैद से मुक्त करना चाहिए। श्री सुदेश कुमार ने प्रार्थना की कि ११वें पंचेन लामा स्वस्थ रहें और दीर्घायु हों। साथ ही उन्होंने यह भी आशा और कामना की कि हम सब उनसे जल्द मिलें।

आईटीएफएस हजारीबाग के संरक्षक डॉ. बी.के. सिंह ने कहा, '११वें पंचेन लामा तिब्बती लोगों के सच्चे गुरु हैं जिन्हें परम पावन १४वें दलाई लामा द्वारा नियुक्त किया गया था और चीनी सरकार को उन्हें और उनके परिवार को उनकी कैद से तुरंत रिहा करना चाहिए।'

आईटीएफएस के जिला महासचिव श्री अजीत कुमार चंद्रवंशी, श्री श्याम किशोर प्रसाद, श्री अजय कुमार सिंह, श्री सुरेंद्र सिन्हा, श्री उपेंद्र सिन्हा, श्री अनिल कुमार सिंह, श्री शैलेश कुमार चंद्रवंशी और अन्य सदस्य भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए।
आईटीएफएस हजारीबाग के सभी सदस्यों ने एक स्वर से मांग की कि चीनी सरकार सभी की भलाई के लिए पंचेन लामा और उनके पूरे परिवार को तुरंत रिहा करे।
तिब्बत में ७० साल और उससे आगे: दुनिया को चीन के नए सिरे से शुरू किए चीनीकरण अभियान से सावधान रहना चाहिए

OMMCOM NEWS

• तिब्बत में ७० साल और उससे आगे: दुनिया को चीन के नए सिरे से शुरू किए चीनीकरण अभियान से सावधान रहना चाहिए

१७ अप्रैल,२०२२

बीजिंग में हाल ही में संपन्न हुए शीतकालीन ओलंपिक खेल कई कारणों से चर्चा में रहा। इस दौरान एक रूसी बायथलॉन प्रतिभागी ने सोशल मीडिया पर अल्प और बेस्वाद भोजन के बारे में अपनी शिकायत दर्ज कराई तो एक अन्य रूसी खिलाड़ी ने प्रतिबंधित पदार्थ के लिए पॉजिटिव रिपोर्ट पाए जाने के बाद विवाद खड़ा कर दिया। जिन पत्रकारों ने पहली बार रूसी स्केटर कामिला वलीवा के पॉजिटिव ड्रग्स परीक्षण की कहानी की रिपोर्ट की, उन्हें जान से मारने की धमकी दी गई और उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया।

अपने प्रदर्शन के दौरान गिर गईं चीन की विख्यात स्केटर झू यीको जबरदस्त विरोध और घृणास्पद पोस्ट का सामना करना पड़ा।इस कारण चीन में वीबो और डॉयिन सहित सोशल मीडिया दिग्गजों को हजारों पोस्ट हटाने के लिए मजबूर होना पड़ा। लेकिन शायद सबसे महत्वपूर्ण घटना संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व में कुछ देशों द्वारा शीतकालीन ओलंपिक खेलों का राजनयिक बहिष्कार था, जो चीन के उय्गूर मुसलमानों के खिलाफ झिंझियांग क्षेत्र में मानवाधिकारों के 'गंभीर'उल्लंघन के कारण किया गया था।

दरअसल, 'वर्ल्ड रिपोर्ट २०२२' शीर्षक वाली रिपोर्ट में ह्यूमन राइट्स वॉच ने चीन पर कोविड प्रतिबंधों की आड़ में झिंझियांग और हांगकांग में नागरिक स्वतंत्रता और मानवाधिकारों के निर्मम दमन का आरोप लगाया है।

चीन की मुस्लिम आबादी का यह व्यवस्थित दमन और 'पुनर्शिक्षा' कार्यक्रम राष्ट्रपति शी जिनपिंग के चीनीकरण अभियानका नए सिरे से भव्य डिजाइन का एक छोर मात्र है। यह एक ऐसा शब्द है जो व्यंजना से एक ऐसी प्रक्रिया को दर्शाता है जिससे गैर-चीनी समाज चीनी संस्कृति के प्रभाव में आ जाते हैं। हालांकि व्यवहार में वास्तविकता बहुत कठोर और अधिक अप्रिय है।

उदाहरण के लिए उग्यूरों और अन्य तुर्क मुसलमानों की विशिष्ट पहचान को मिटाने के लिए चीनी सरकार के प्रयासों को लें। पिछले साल जनवरी में सैटेलाइट तस्वीरों की जांच करने वाली सीएनएन की एक जांच ने निष्कर्ष निकाला कि १००से अधिक पारंपरिक उग्यूर कब्रिस्तान नष्ट कर दिए गए थे। अगस्त में उपग्रह तस्वारों से पता चला कि झिंजियांग के अधिकारियों ने २६०से अधिक 'विशाल'नजरबंदी केंद्रों का निर्माण किया था, जो तुर्क मुसलमानों की मनमानी हिरासत के आरोपों की विश्वसनीयता को बल देता है। ये तस्वीरें बड़े पैमाने पर मस्जिदों के पुनर्निर्माण की ओर भी इशारा करती है जहां कई जगहों पर गुंबदों और मीनारों को हटा दिया गया है।

यही कहानी तिब्बत में दोहराई जाती है जहां चीन के निरंतर अधिनायकवाद ने हजारों तिब्बतियों को उनके आध्यात्मिक नेता १४वें दलाई लामा के साथ प्रगतिशील समाजों में शरण लेने के लिए मजबूर किया है। १९५० में एक अकारण आक्रमण के साथ शुरु हुई चीनी सेना द्वारा तिब्बत की तबाही को हेनरिक हैरर के संस्मरण 'सेवन इयर्स इन तिब्बत' में विस्तार से वर्णन किया गया है, जिसे लेकर बाद में एक फीचर फिल्म बनाया गया। इस फिल्म को पुरस्कार भी मिला था।

सत्तर साल बाद भी चीजें ज्यादा नहीं बदली हैं और अब तिब्बतियों को चीन के बर्बर दमनकारी शासन का सामना करना पड़ रहा है। दलाई लामा ने नवंबर २०२१ में इसके 'संकीर्ण दिमाग वाले चीनी कम्युनिस्ट नेताओं' द्वारा 'कठोर नियंत्रण' के बारे में बात की थी। संयोग से१० मार्च तिब्बत विद्रोह दिवस की ६३वीं वर्षगांठ थी, जिसमें १९५९ में हजारों तिब्बती चीनी आक्रमण के विरोध में एकत्र हुए थे। इस शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शन को चीनी सरकार द्वारा हिंसक रूप से कुचल दिया गया था।

हांगकांग की भी ऐसी ही कहानी है जहां लोकतंत्र समर्थक कार्यकर्ताओं को व्यवस्थित रूप से कठोर कानूनों के तहत निशाना बनाया जाता है। आंतरिक मंगोलिया में,जहां ४० लाख नस्लीय मंगोल अल्पसंख्यक हैं, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने कम कठोर लेकिन फिर भी दमनकारी उपाय अपनाए हैं।

अक्तूबर २०२०मेंचीनी सरकार ने फ्रांस में मंगोल इतिहास और संस्कृति पर एक प्रदर्शनी को रोकने के लिए हस्तक्षेप किया। इसके बाद उस संग्रहालय के निदेशक ने शिकायत की कि 'एक नए चीनी राष्ट्रीयतावादी विचार के तहत मंगोलियाई इतिहास और संस्कृति को पूरी तरह से मिटाने के उद्देश्य से इतिहास के पुनर्लेखन के लिए तत्व प्रवृत्त' हैं। इससे पहले अप्रैल मेंशी जिनपिंग ने आंतरिक मंगोलिया के एक प्रतिनिधिमंडल को 'परिणाम' भुगतने की चेतावनी दी थी। असल में आंतरिक मंगोलिया ने स्कूलों में शिक्षा के माध्यम मंगोलियाई भाषा को हटाकर चीनी भाषा थोपने का विरोध किया था।

चीन न केवल नस्लीय रूप से अल्पसंख्यकों, बल्कि मुख्यधारा के असहमत समूहों को भी चुप कराने के लिए सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग करता है। विख्यात पुरुषों पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाने के लिए अधिक महिलाओं के सामने आने के बाद चीन में #MeToo आंदोलन नए रूप और आकर्षण के साथ सामने आया है। नवंबर २०२१ में पूर्व उप-प्रधानमंत्री झांग गाओली पर यौन उत्पीड़न करने का आरोप लगाने के बाद टेनिस स्टार पेंग शुई को चुप करा दिया गया और बाद में वह लापता भी हो गईं।

अलीबाबा के संस्थापक और पूर्व अध्यक्ष जैक मा जनवरी २०२१ के बाद से कभी सार्वजनिक तौर पर दिखाई नहीं दिए हैं। इससे उनके लापता होने के बारे में अटकलें लगाई जा रही हैं क्योंकि उन्होंने एक भाषण में चीन के वित्तीय नियामकों और बैंकों की आलोचना की थी। यह भी अफवाह है कि उन्हें अधिकारियों द्वारा पद छोड़ने के लिए मजबूर किया गया था।

कोविड -१९ के बाद में वुहान की वर्षगांठ के आसपास सरकारी आधिकारिक व्याख्यायों पर सवाल उठाने वाली आवाजों को बंद कराने और सरकारी बयानों के पक्ष में लाने के लिए सीसीपी की सेंसरशिप लगाई गईं हैं। कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया गया और वायरस से मरने वाले लोगों के मुखर रिश्तेदारों को परेशान किया गया। विदेशी मीडियाकर्मियों को नियमित रूप से तथ्यों की रिपोर्टिंग करने से रोका गया है, जैसा कि हाल ही में जुलाई २०२१ में झेंग्झौ में बाढ़ की रिपोर्टिंग से उन्हें रोकने की घटना से स्पष्ट हो जाता है।

संक्षेप में, चीनीकरण अभियानके तीन चरण हैं- पहला धर्म का चीनीकरण। यह 'चीनी विशेषताओं'के साथ बौद्ध धर्म और इस्लाम को 'पुनः शैलीबद्ध'करने के चीनी प्रयासों में स्पष्ट है। दूसरा, वैचारिक 'पुनर्शिक्षा' कार्यक्रम। इसका अर्थ है नस्लीय पहचान को खत्म करना और कम्युनिस्ट विचारधारा को थोपना। यह 'पुनः शिक्षा' स्पष्ट रूप से प्रभावशाली दिमाग वाले बच्चों के दिमाग को मोड़कर करके स्कूलों में शुरू होगी। तीसरा,चीन असंतुष्टों को अलग-थलग कर देगा। यह ट्विटर जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर प्रतिबंध लगाने, इंटरनेट पर पुलिसिंग, लोकप्रिय नेताओं को बंदी बनाने, अंतरराष्ट्रीय मंचों को मान्यता देने से इनकार करने और गलत सूचनाओं का एक जाल बुनने सहित प्रतिबंध लगाने जैसी कार्रवाइयों द्वारा किया जाता है।

• दुनिया को क्यों सावधान रहना चाहिए?

यह मान लेना बहुत बचकानी बात होगी कि शी जिनपिंग ने जिस सांस्कृतिक और वैचारिक 'आत्मसात' की प्रक्रिया शुरू की है, वह केवल चीन तक ही सीमित रहेगी। निश्चित रूप से 'चीनीकरण' का शुरुआती ध्यान वास्तव में चीन के भीतर असंतुष्ट अल्पसंख्यकों पर है। हालांकि, यह स्पष्ट है कि चीन अपनी प्लेबुक से दूसरे देशों में भी संशोधनों के साथ इन नियमों को लागू कर रहा है। अतिसंवेदनशील देशों को प्रभावित करने के लिए आर्थिक ताकत का उपयोग एक प्रमुख हथियार है। दक्षिण पूर्व एशिया, मध्य एशिया, दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका में चीन ने जो पैठ बनाई है, उससे यह स्पष्ट है। आर्थिक शक्ति से लैस सीसीपी मशीनरी धीरे-धीरे दुनिया को अपनी पसंद के फ्रेम में फिर से फिट करके नया आकार दे रही है।

वर्तमान में दुनिया भर में अनुमानित ११० लाख चीनी प्रवासी फैले हुए हें जो दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा नस्लीय प्रवासी समूह है। अन्य नस्लीय प्रवासियों के विपरीत चीनी प्रवासी न केवल चीन की संस्कृति और भाषा का प्रचार करते हैं, बल्कि वे व्यावसायिक उद्देश्यों, आर्थिक विकास और राजनयिक उद्देश्यों के लिए भी अपने प्रभाव को एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल करते हैं।

परंपरागत रूप से वे अपने सदस्यों के भीतर संबंधों को बढ़ाने और एक नए देश में घर जैसा महसूस करने के लिए बड़े समुदाय बनाते हैं। एक मुख्य चुनौती आर्थिक स्तर पर है।चीनी प्रवासियों के व्यापार की शक्ति में वृद्धि हुई है और कभी-कभी इसने मेजबान देश की अर्थव्यवस्था को भी मात दे दी है। उदाहरण के लिए, दक्षिण-पूर्व एशिया में चीनी प्रवासी व्यवसाय पर हावी हैं।जबकि वे वहां की आबादी का केवल एक छोटा सा अल्पसंख्यक हिस्सा हैं लेकिन वे इस क्षेत्र की निजी कॉरपोरेट संपत्ति के लगभग ६० प्रतिशत हिस्से पर काबिज हैं।

चीन अपने 'चीनीकरण' प्रयास में एक हद तक सफल रहा है। इसने कई देशों को भारी मात्रा में ऋण देकर खामोश करा दिया है जो अब बढ़ते कर्ज के जाल में फंस गए हैं। इससे अंततः कई ऋणी देश अपनी संप्रभु निर्णय लेने की क्षमता का त्याग करेंगे और सीसीपी के प्रति निष्ठावान होने का जोखिम उठाएंगे। पाकिस्तान जैसा इस्लामी देश उग्यूरों पर किए गए क्रूर दमन का विरोध क्यों करेगा। 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई)' चीनी श्रमिकों के बाहरी प्रवाह और दुनिया भर के कमजोर क्षेत्रों में ऋण के साथ चीन की 'चीनीकरण' करने की रणनीति को बढ़ावा देगा। इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, दुनिया को सीसीपी के कपटपूर्ण मंसूबों से सतर्क हो जाना चाहिए।

*****

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tenzin Jorden
Deputy Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

तेनजिंग जॉर्डन
उप–समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः indiatibet7@gmail.com

April, 2022, Years: 43 Issue: 04 Regd No. : RNI 34636-79

भारत के कानून मंत्री माननीय श्री किरण रिजिजू के साथ 17वीं निर्वासित तिब्बती संसद के प्रतिनिधि

नई दिल्ली स्थित हरियाणा सदन में आईटीसीओ के कार्यकारी उप-समन्वयक तेनजिंग जॉर्डन को सोविनियर भेंट करते भारत-तिब्बत समन्वय संघ के संरक्षक पूर्व राज्यपाल कप्तान सिंह सोलंकी